।। दादा भगवान ।।

।। गीता भगवान ।।

भजन पुष्पांजलि

भाग 3

भजन पुष्पांजलि

भाग 3

गुरु के उपकारों की कलियां, चुन-चुन सुन्दर द्वार बनाएं।
निज की सारी भक्ति संजोकर, गुरु के चरणों में पहनाएं।।

पावन भाव गुथे जब शब्दों में कहलाए वे भजन।
निराकार साकार की सम्मिलित कृपा करती है दिव्य सृजन।।

विषय सूची

अ	अज नच लो	09
	अहा प्यार की दौलत सबसे बड़ी	10
आ	आ गया झूमो नाचो गाओ	11
	आई हैं बहारें	12
	आज से पहले	13
	आए जो इस चमन में तुम	14
	आओ सारे खेलें होली	15
	आखिर इस दर तक	16
	आई होली आई	17
	आयो रे आयो	18
	आ जाना श्याम आ जाना	19
उ	उनकी नजरें करम	20
	उड़ चलो हंसा	21
ऐ	ऐ श्याम तेरी	22
ओ	ओ दादा जी	23
	ओ गीता भगवान	24
	ओ कान्हा रे	25
औ	और नहीं कुछ तुमसे कहना	26
क	काहे घबराता दिल	27
	कुछ ऐसी कसक	28
	क्या कहूं कौन सी दौलत है गुरु	29
	कान्हा आयो रे	30
	कितने सच्चे हैं	31

- कैसी मुरली बजाई श्याम ने 32
- काहे घबराए 33
- कोई नहीं मेरा तेरे सिवा 34

ख

- खुशियां ही खुशियां 35
- खुशियां लेके दिन 36
- खिली दर्शन की गुलजार 37
- खुशियों की बेला आई रे 38

ग

- गुरु से तुम प्यार करो 39
- गुरु शरण में आइए 40
- गुरु को तो सब मानते हैं 41
- गुरु ब्रह्मा विष्णु है 42
- गुरु ने ऐसा ज्ञान दिया है 43
- गुरु आने से हो गई भोर 44
- गुरु वचनों की छांव में 45
- गीता भगवन तेरी कुर्बानी 46
- गीता भगवन की 47
- गुरु मुख इक पौधा 48
- गुरु तू न मिलता जो क्या होता 49
- गुरु के मुख से निकला 50
- गुरु शरण में आओगे 51

च

- चमका है जिंदगी में 52
- चारों धामों से बढ़कर 53
- चली गुरु प्रेम की हवा चली 54
- चलो सखी उस देश 55

ज

- जब से तेरे दर पे 56
- जागे रे जागे रे भाग्य मेरे जागे 57
- जन्म-जन्म का साथ है 58
- जरा मटकी सम्भाल बृजबाला 59
- ज्योत से ज्योत जलाओ 60
- जय गीता भगवान 61
- जिसको जीवन में मिला सत्संग 61

त

- तू ही बता 63
- तेरे अहसान को सत्गुरु 64
- तेरे संग डोर बंधी है 65
- तेरे हवाले मेरी गाड़ी 66
- तेरी इबादत ने दिल को है 67
- तेरे ज्ञान का सहारा 68
- तुम करो गुरु संग 69
- तू है कमाल मौला 70
- तन वारां कि मैं मन वारां 71
- तुम प्राण हो हमारे 72
- तेरे चरणों का सहारा 73
- तू नैनों का तारा है 74
- तुम तो यहीं कहीं सत्गुरु 75
- तेरे दर पे जब से 76
- तुमको अपने दिल में 77
- तुम्हीं मेरे मालिक 78
- तुमसे प्यारा इस दुनिया में 79
- तेरे दर से जिसे मोहब्बत है 80
- तेरे दर पे बैठा है 81
- तेरी रहमत का दादा जी 82
- तेरा आना 83
- तुझको पुकारे गुरु का प्यार 84
- तेरा हाथ जिसने पकड़ा 85

द

- दिया है प्यार 86
- दीवानों का मेला 87
- दुनिया में ऐसा कहां 88
- दे दी हमें आजादी 89

- दरबार ये तुम्हारा 90
- दादा का ज्ञान निराला 91

न
- निश्चय तुम गुरु से कर लो 92

प
- प्रेम सुधा बरसाता 94
- प्रेम हमारी साधना है 95
- पिला दे वे श्यामा राम नाम दी 96
- प्रेम की गंगा बहती है 97
- पाया जो दीदार 98

ब
- बेशक हाजिरा हजूर है 99
- बाजे श्वांसों की शहनाई 100
- बांके बिहारी तेरे नैन कजरारे 101

म
- मेरा चैन वैन सब उजड़ा 102
- मेरी मंजिल सत्गुरु का दरबार है 103
- मेरे सत्गुरु से बड़ा कौन भला 104
- मेरे कान्हा होरी को है त्योहार 105
- मीरा बदनाम हो गई 106
- मैया-मैया-मैया 107
- मुझे अब मिल गए सत्गुरु 108
- मां यशोदा तेरा नटखट कान्हा 109
- मुझे किसने मोहब्बत से 110
- मेरे सत्गुरु तुम्हारी मैं करूं वंदना 111
- मुझे सब कुछ तुमने दे दिया 112
- मिलता है जब मुर्शिदे कामिल 113
- मेरे सत्गुरु का दरबार 114
- मुझे तूने सत्गुरु 115
- मेरो अंग-अंग दियो रंग 116
- मेरे सत्गुरु तेरी नौकरी 117
- मन मति दुबोए 118

य
- यहां बनता नसीबा सभी का 119
- ये आग सी तपती दुनिया 120
- ये मोहन हैं 121
- ये दौलत भी वारूं 122
- ये श्याम तेरी मुरली 123
- ये जीवन सूखी बगिया थी 124
- ये पल दो पल का जीवन 125

र
- रस्ता रोके पाप लागे 126
- रंग लो रंग लो 127
- राम सबका है 128
- रोता है मन तड़पता है मन 129
- राधा के मन में 130

ल
- लगी वालियां नू नींद नयो आंदी 131
- ले लो राम नाम अधिकारी 132
- लुट रहा लुट रहा 133

स
- सूरत में तेरी ही तो 134
- सत्गुरु आए हैं 135
- सुख दुख धूप और छांव रे 136
- सारे जग को तारने दादा 137
- सांची कहूं तोरे आवन से सत्गुरु 138
- सबसे सुंदर सबसे प्यारा 139
- सत्गुरु के हैं जो 140
- सत्गुरु खेल रहे हैं होली 141
- सत्गुरु जी मेरे प्यारे 142
- सत्गुरु की शरण आना 143
- सत्संग की लगन तन मन अर्पण 144
- सदा सुख ही बरसाती 145
- सुनो-सुनो-सुनो 146
- सत्यनाम का सिमरन कर ले 147
- सत्गुरु के सत्संग में 148

- सत्गुरु तुम्हारी मेहरबानियां हैं 149
- साकी तेरे मैखाने में 150
- सत्गुरु तेरे वचनों में 151
- सत्गुरु भगवान को प्यारे गीता 152
- सच की पतवार है 153
- सारा दिन हो अभ्यास अगर 154
- सत्गुरु के आने से जीवन में 155
- सत्गुरु कमाल हो 156
- सत्गुरु तुम तो हो मेरे कुम्हार 157
- सत्गुरु पाया ते हो ते निहाल 158
- संता दा संग 159
- सत्गुरु तेरे चरणों की 160
- श्याम मेरा मैं श्याम की होई रे 161
- श्याम संग खेले होली 162
- शुकराना मेरे सत्गुरु 163
- शुक्रिया-शुक्रिया 164
- श्रद्धा के सुमन शत-शत वंदन 165

ह
- होलियां में उड़े रे गुलाल 166
- हे सत्संग के तले 167
- हर पल याद तुम्हारी हो 168
- होली में तेरो लाड़ला 169
- हिम्मत न हारिए 170
- होली आई रंग लाई 171
- है अपना सौभाग्य हमें गुरु मिला 172
- हुआ मन मंदिर में उजाला 173
- होली आई रे कन्हाई 174

ज्ञ
- ज्ञान सुहाना मिल गया 175

अज नच लो

अज नच लो नी ओए होए अज टप लो नी ओए होए
अज समा निराला छा गया मेरा गुरु महफिल विच आ गया।

होइया दीवानी मैं तो अज मस्तानी
तेरे प्यार दा चढ़या खुमार नी
झूम-झूम जावां मैं तो नच-नच जावां
ऐदा मिलया है प्यार बेशुमार नी
तेरी रहमत नी ओए होए-2
अज जाणी सबने जान ली मेरा गुरु...

बड़या सी जेबा मन कामी अभिमानी
तेरे नाम दी फेरन अज माला
गुरु बिना नहीं गत ऐतां गल सच्ची
कोई पादां है नसीबा वाला
ऐनू जाण लो नी ओए ओए
पहचान लो नी ओए होए
ऐतां जग तो पखरां आ गया मेरा गुरु...

आवे जेड़ा वी सवाली, जावे कदीं वी ना खाली
पावे भक्ति दा भरे भंडार नी
वडंदे जांदे ऐता प्रेम खजाना
ऐता कर दे सबनू निहाल नी
ऐदां द्वारा नी ओए होए जग तो न्यारा नी ओए होए
आज पाया मैं तो पा लिया मेरा गुरु महफिल...

अहा प्यार की दौलत सबसे बड़ी

तर्ज-छू लेने दो नाजुक होंठों को

अहा प्यार की दौलत सबसे बड़ी
सत्गुरु का नगीना प्यार है-2
हर दिल को दिल से मिलाते चलो
सत्गुरु का नगीना सवाया करो

प्यासी है दुनिया मोहब्बत की
तुम प्यार की गंगा बहाते चलो
मुरझाए हुए जीवन के चमन
खिला दो मोहब्बत व प्यार से

सतसंग की डगर है प्रेम डगर
जो कहती है सबसे प्रेम कर
इस प्रेम की नैया में बैठकर
इस प्रेम की नैया में बैठकर
जीवन का सफर तू पार कर
हर दिल को दिल से...

सब एक ही एक हैं सबसे बना
नफरत को इस दिल से कर दो फना
न तू है न मैं हूं बस है खुदा
फिर कैसे रहें हम उनसे जुदा
है प्यार की दौलत...

आ गया झूमो नाचो गाओ

2007 आ गया झूमो नाचो गाओ
नया साल है देखो आ गया झूमो नाचो...

मेरे सत्गुरु दीन दयाल
इसकी कोई नहीं मिसाल
मैं इसकी महिमा क्या कहूं
झूमो नाचो गाओ...

जित्थे इक नजर वो पाए
ओनू कख तो लख बनाए
जो सद्गुरु की शरण आवे
वो आत्मपद को पावे
करवां नू लख बना गया झूमो नाचो...

जिनु सत्गुरु इक वारी देखे
मिट जाए जन्मा दे लेखे
जो चरणा विच आवे
वो रज-रज दर्शन पावे
वचना दा अमृत पा गया झूमो नाचो...

जिनु सत्गुरु आप बुलावे
ओनू घर विच चैन न आवे
वो मुड़-मुड़ दर ते आए
वो अपना भाग्य जगावे
वो गुरु दर्शन नू पा गया। झूमो नाचो...

आई हैं बहारें

आई हैं बहारें झूमें नाचें गाएं हम
प्यार का जमाना आया दूर हुए गम
श्याम की लीला रंग लाई हा-हा-हा...
श्याम ने बंशी बजाई हो-हो-हो...

चमका है ये ज्ञान का सूरज और फैला है उजियाला
नई उमंगें संग लाया है हर एक आने वाला
प्रेम के गीत सुनाएं हम सब मिल मौज मनाएं हम
श्याम की लीला रंग...

अब न होंगे उलझनों के इस दिल में अफसाने
प्यार के रंग में रंगते जाएं अपने हो या बेगाने
सबके दिन फिर आए हैं मंजिल अपनी पाई है
श्याम की लीला रंग...

अब न प्यार का भूखा होगा न माया का प्यासा
अब न मन का मालिक दूजा और न कोई निराशा
अपने मन के मालिक हम मिलके ढोल बजाएं हम
श्याम की लीला रंग...

ज्ञान की ढपली प्रेम का बाजा भक्ति का रस डाला
सांसों की सरगम से जपते सतगुरु नाम की माला
सत्गुरु को रिझाएं हम, जीवन सफल बनाएं हम
श्याम की लीला रंग...

आज से पहले

तर्ज : आज से पहले, आज से ज्यादा

आज से पहले आज से ज्यादा खुशी आज तक नहीं मिली
इतनी प्यारी महफिल तेरी कभी आज तक नहीं मिली

इसको संजोग कहें या किस्मत का लेखा
हम जो अचानक मिले हैं
मनचाहा सतगुरु पाकर हम सबके चेहरे
देखो तो कैसे खिले हैं ओऽऽ
तकदीरों को जोड़ दे ऐसे कड़ी आज तक नहीं मिली

संकल्प हो जाए पूरा जो हमने चाहा
ये मेरे दिल की दुवा है
ये पल जो बीत रहा है उसके नशे में
दिल मेरा गाने लगा है
इसी खुशी को ढूंढ़ रहे थे यही आज तक नहीं मिली

दिल में तूफान उठा है होंठों पे नगमा
अरमान दिल में जगे हैं
तेरे नजदीक आकर तुझसे ही मिलके
जीवन महकने लगा है
कोई कहे ना मंजिल मुझको देखो
आज से सही मिली आज से पहले...

आए जो इस चमन में तुम

तर्ज : ऐ सनम तेरे हो गए हम

आए जो इस चमन में तुम
महका ये सारा आलम
पा गए हम तो भगवन्
प्यार तेरा ये निराला

थे भटकते राही पा गए मंजिल अब
डूब रही थी कश्ती मिल गया साहिल अब
पाके तुम्हें ओ गुरुवर, खिल गया है मुकद्दर आए जो...

मन भी अब सुनता है तेरी पावन वाणी
पा के तेरी मोहब्बत छूटी दुनिया ये
मस्त कर गई ओ गुरुवर तेरी नजर नूरानी आए जो...

सूने इस जीवन में तूने रंग बिखेरा
वीरान सी जिंदगी को तूने आ के संवारा
रात थी अंधियारी, तूने किया है उजाला आए जो...

मुखड़ा: आए जो तेरी शरण में हम
पाया तेरा प्यार पावन
सिखा दिया तूने भगवन
हमको तो मुस्कुराना

आओ सारे खेलें होली

तर्ज : हंसता हुआ नूरानी चेहरा

आओ सारे खेलें होली, सारे हिलमिल खेलें होली
मस्ती लेके आई होली, मैं तो श्याम तेरी होली
मस्ती लेके आई होली, मैं तो श्याम तेरी होली
तेरी होली तेरी होली, मैं तो श्याम तेरी होली

जी भरके रंग डालो, जी भरके प्यार कर, जी भरके...
सब कुछ गंवारा है, थोड़ा सा प्यार कर बंशी वाले,
मुरली वाले अब तो हमसे नजरें मिला आओ...

कान्हा ने रंग डाला, राधा ने वार किया, कान्हा ने...
भर-भरके पिचकारी सखियों को लाल किया
खेले होली, मोहन होली...खेले होली मोहन होली
फागुन का महीना आयो रे आओ सारे...

ऐसी चढ़े मस्ती कि उतर नहीं पाए, ऐसी चढ़े...
भंगिया भी चाहे फीकी पड़ जाए ओ रे कांहा,
मुझको ऐसी घोंट के पिला आओ सारे...

रंग दो रे श्याम अब मोरी चुनरिया, रंग दो रे...
धोबनिया धोए चाहे सारी उमरिया
रंग ना उतरे ऐसा रंग दो-2, बीत जाए सारी उमरिया
आओ सारे...

आखिर इस दर तक

तर्ज : छू लेने दो नाजुक होंठों को

आखिर इस दर तक आ पहुंचे
जिस दर के सभी दीवाने हैं
यहां जामे मोहब्बत मिलता है
रहमत के खुले खजाने हैं

हर रंग यहां पर इनायत है
और जज़्बा ये शोख शरारत है
ये सिर है अमानत सत्गुरु की
ले आए सभी नजराने हैं

दुनिया से नहीं सरोकार हमें
वचनों से तेरे है प्यार हमें
साकार तेरे चरणों की कसम
आबाद हुए वीराने हैं

इस दर पर जो भी आता है
वो सत्गुरु का बन जाता है
जिस महफिल में रोशन हो ये शमा
उस शमा के हम परवाने हैं

ना जर के हम तमन्नाई
ना हुस्न के हम शौदाई
जिस दीद से हो हमें दीदे खुदा
उस दीद के हम मस्ताने हैं।

आई होली आई

तर्ज : आज हमारे दिल में अजब ये उलझन है

आई होली आई, आज होली आई रे
रंग हजारों लेके आज होली आई रे
रंग देना-रंग देना चुनर मोरी रंग देना
कान्हा तू जैसा चाहे, आज मोहे रंग देना

मिलके तुझसे मिली दो जहां की खुशी
चरणों में तेरे रहूं अब यही विनती
तुझको पाकर आज होयऽऽ ये रूह मुस्कराई है
आई होली आई...

मुरली की धुन सुन के, मन मस्ताना हुआ
छवि तेरी देखी तो, ये दिल दीवाना हुआ
आज हमारे दिल में, अजब खुशी छाई है
आई होली आई...

तुझे रिझाऊंगी कान्हा, तुझे मनाऊंगी
सदा के लिए कान्हा तेरी हो जाऊंगी
हाथों में तेरे मेरी, जीवन की डोरी है
आई होली आई....

आयो रे आयो

आयो रे आयो मेरे घर कान्हा आयो
मुरली की तान सुनाने लीला रास रचाने

दुनिया ने ठुकराया जिसको
गुरु ने गले लगाया उसको
मोह ममता से छुड़ाने
प्रेम का रंग चढ़ाने

जीवन को जो बदले
वो है मेरा सच्चा साहिब
जग को मिथ्या बताने
निश्चय आज कराने

गोपियों का सच्चा सहारा
मेरा सत्गुरु प्यारा-2
किरपा अपनी लुटाने
वाणी हमको सुनाने

नाचूं मैं तो गाऊं लख-2
लख-लख तो शुकर मनाऊं
प्रेम का रंग चढ़ाने आत्म रस पिलाने
आयो रे आयो...

आ जाना श्याम आ जाना

तर्ज : जब दिल न लगे दिलदार

आ जाना श्याम आ जाना
जब दिल न लगे तेरा श्याम
हमारी गली आ जाना

पकड़े तो जाओगे तुम माखन चुराते
रोने लगोगे डांट मैया की खाके
जब चोरी का लगे इल्जाम
हमारी गली आ जाना

रूठेगी राधा तुम्हारी किसी दिन
फिर क्या करोगे कन्हैया तुम उस दिन
जब राधा दिखाए नखरे
हमारी गली आ जाना

हम इंतजार तेरा करते रहेंगे
बनवारी बस तुमसे इतना कहेंगे
जब आएगी हमारी याद
हमारी गली आ जाना

उनकी नजरें करम

उनकी नजरें करम का असर देखिए
प्यार देता हुआ हर बशर देखिए

देखती थी न उनको जो कोई नजर
बेकरार अब तो हर एक नजर देखिए

उनकी नजरें करम छू गई हैं जिसे
उसको बदला हुआ हर कदर देखिए

उसने सोना बनाया है लोहे को छू
वो दमकता फिरे है जिधर देखिए

उनकी नजरें करम पर जिन्हें फख्र है
उनको भटका इधर न उधर देखिए

प्यार देता दीखेगा सभी को अरे
प्यार से छलछलाता जिगर देखिए

उड़ चलो हंसा

उड़ चलो हंसा अमरलोक में
यह तो देश न तेरा है
पी ले पानी चुग ले दाना
पंछी रैन बसेरा है

माया का जहां ज्ञान नहीं है
काया का जहां ध्यान नहीं है
प्रीत में जहां आंच नहीं है
प्रेम ही प्रेम का डेरा है

अवसर मिला है जागो रे हंसा
संत शरण में लागो रे हंसा
ज्योत जलाओ ज्ञान की मन में
मिटे अज्ञान अंधेरा है

भाई बंधु मित्र सुहेला
ये दुनिया दो दिन का मेला
क्या है तेरा क्या है मेरा
चला चली का फेरा है

अपने आपको खुद पहचानो
सत् चित् आनंद रूप को जानो
तत्वज्ञान से मिट जाए तेरा
जन्म मरण का फेरा है

ऐ श्याम तेरी...

तर्ज : अपने दीवानों पर इक

ऐ श्याम तेरी वंशी
घायल कर जाती है
घायल कर जाती है
पागल कर जाती है

गर सोने की होती
तो क्या करते मोहन-2
ये बांस की हो करके-2
दिल को तड़पाती है,

गर गोरे होते खुद
तो क्या करते मोहन
इस श्याम रंग पर ही-2
दुनिया मर जाती है-2

कभी रास रचाते हो
कभी गऊए चराते हो
रूठों को मनाने की-2
अदा तुमको बहुत आती है
ऐ श्याम तेरी...

ओ दादा जी...

तर्ज : ओ साथी रे तेरे बिना भी क्या जीना

ओ दादा जी तेरे बिना भी क्या जीना
जीवन ये सूना था, जब इसमें तू न था
तेरे बिना कुछ कहीं ना

चेतन हूं मैं ब्रह्म हूं मैं आत्मस्वरूप ये जीवन है
लाख यतन से ये तन पाया
विरथा ही जग में इसको गंवाया
धुन ये लगा ले अब तो मनवा
हरि बिन कुछ कहीं ना तेरे बिना भी क्या जीना...

ज्ञान का दीपक प्रेम की बाती मन में जगा लो अब तो साकी
जीवन संध्या डूब रही है सांस है तेरे थोड़े बाकी
श्वांस ये टूटे ना आस ये छूटे ना तू मुझसे रूठे कभी ना
तेरे बिना भी क्या जीना...

जीवन धन्य हुआ है मेरा जब से पाया साथ है तेरा
रोशन हुई मेरे जीवन की बगिया दूर हुआ हर गमका अंधेरा
मन में अब शोर नहीं है अब इसका जोर नहीं है
कोई भी चोर कहीं ना, तेरे बिना भी क्या जीना...

ओ गीता भगवान

तर्ज : पंख होते तो उड़ जाती मैं

ओ गीता भगवन तुम्हारे त्याग और कुर्बानी
से बने लाखों करोड़ों के जीवन-2

त्याग दिए तूने सुख और वैभव
जैसे तरे हम सागर ये भव-2
कृपा दृष्टि हम पर है तुम्हारी हैऽऽऽ-2
पार लगे क्यों न नैया हमारी...

तुम्हीं हमारे हो जीवन दाता
तुम्हीं हमारे हो भाग्य विधाता
जीवन नैया के तुम्हीं हो खिवैया
राम तुम हो, तुम्हीं हो कृष्ण कन्हैया...

सर पर हमारे है हाथ तुम्हारा पग-2
पर भगवान है साथ तुम्हारा-2
जब तक है सूरज चांद सितारे
दिल में रहेगा प्यार तुम्हारा...त्याग दिए...

महिमा तुम्हारी अब हम हैं जाने
आंखों में आंसू लब पर हैं शुकराने
कैसे करें गुणगान तुम्हारे
छोटी जुबां है शब्द भी हारे...त्याग दिए...

ओ कान्हा रे

ओ कान्हा रे कहां जाके छिपा रे
तेरे बिना ओ कान्हा मन मेरा लागे ना
जो तू नहीं तो कुछ भी नहीं रे

तेरी राहों पे पलकें बिछाए
तेरी मूरत को दिल में बसाए
रस्ता तेरा देखें हम तेरे बिना रोएं हम
अब तो आके तू दर्शन दे
ओ कान्हा रे...

तेरी वंशी से मन मेरा डोले
रह-रहकर ये मुझसे ही बोले
मेरा कान्हा आएगा मुझसे प्रीत लगाएगा
जो तू न माने बात मेरी रे...
ओ कान्हा रे...

काहे हमको नजर तू न आए
काहे नैनों को इतना तरसाए
भक्तों के तू मन की सुन
हमको लागे तेरी धुन
अब तो मेरा धीर टूटे रे ओ कान्हा रे...

और नहीं कुछ तुमसे कहना

और नहीं कुछ तुमसे कहना-2
सत्‌गुरु मेरे-3, मुझमें ही रहनाSSS

दीप नहीं तो कैसी ज्योति
सीप नहीं तो कैसा मोती
चांद बिना क्या चांदनी होती
ऐसे ही तुमसे हम बने हैं ना
सत्‌गुरु मेरे, सत्‌गुरु मेरे, सत्‌गुरु मेरे

कुछ देखूं तब तुमको देखूं
छोड के मैं सब तुमको देखूं
फिर जब देखूं तब तुम को देखूं
और न देखें कुछ ये नैना
सत्‌गुरु मेरे, सत्‌गुरु मेरे, सत्‌गुरु मेरे

सागर जैसा प्यार तुम्हारा
हम हो जाएं इसकी धारा
बहता जाए ये जग सारा
तुमसे अलग होकर नहीं बहना
सत्‌गुरु मेरे, सत्‌गुरु मेरे, सत्‌गुरु मेरे...

काहे घबराता दिल

काहे घबराता दिल और काहे उदास है
मुरलीधर मनमोहना तेरे ही पास है

ढूंढने की उसको क्या है दरकार
सामने खड़ा है तेरा श्याम सरकार
काहे तू पुकारे उसे जोर-जोर से
खींचता नहीं क्यों उसे प्रेम डोर से
छोटी-सी प्रेम कुटिया में उसका निवास है

सांवरा सलोना तेरा सामने खड़ा
बात कैसे करूं ये ही सोच रहा
तू जो तेरे दुख से परेशान है
श्याम की तरफ नहीं तेरा ध्यान है
तू जो उदास है यहां वो भी उदास है

सांवरा सलोना तेरे साथ-साथ है
फिर तुझे डरने की क्या बात है
श्याम का भजन दिन-रात किए जा
साथ तेरा देगा उसे याद किए जा
निकले जुबां से श्याम-श्याम
जब तक ये श्वांस है काहे घबराता दिल...

कुछ ऐसी कसक

कुछ ऐसी कसक तूने मेरे दिल में जगा दी है
सोचा था प्यास बुझेगी तूने और बढ़ा दी है

किस्मत को बदलने का तेरा ढंग ही निराला है
तूने करके कृपा मेरी किस्मत ही बदल दी है
कुछ ऐसी कसक तूने...

सत्गुरु को मोहब्बत है लेकिन वो छुपाते हैं
ये बात तेरी मुझको नजरों ने बता दी है
कुछ ऐसी कसक...

मैं मैखाने क्यूं जाऊं यहां पीकर इतराऊं
मेरे प्यारे सत्गुरु ने नजरों से पिला दी है
कुछ ऐसी कसक...

हम क्यूं करें कोई कर्म दिल गुरु को ही चाहता है
ना जाने बेहोशी में क्या चीज पिला दी है
कुछ ऐसी कसक...

क्या कहूं कौन सी दौलत है गुरु

तर्ज : मेरे महबूब कयामत होगी

क्या कहूं कौन सी दौलत है गुरु
मेरा जीवन मेरी दुनिया मेरी जन्नत है गुरु

बनाया इसी ने है जीवन सारा
अंग-अंग में इनका ही साया
साया ही नहीं काया पे मेरी
उपकार है इनकी श्वासों का
मेरी पूजा मेरी बरकत है गुरु

हम सबको इक प्यार से सींचा
कोई न ऊंचा कोई न नीचा
छाया है भली महिमा है बड़ी
करे प्यार शमा संग परवाना
जन्मों-जन्मों की इबादत है गुरु

अंक में सारी सृष्टि समेटे
सुख दुख को सम करके देखें
आंचल के तले हर जीव पले
वो नर क्या वो तो नारायण
शव को शिव करने की ताकत है गुरु
मेरा जीवन मेरी दुनिया मेरी जन्नत है गुरु

कान्हा आयो रे

तर्ज : झुमका गिरा रे, बरेली के बाजार में

कान्हा आयो रे, चूनर को रंगने होली में
कान्हा आयो रे, चूनर को रंगने होली में

नैनों के रस्ते दिल में आए कान्हा चोरी-चोरी
हंसके बोले सत्संग में आ जाना बांकी छोरी
मैं बोली ना-ना रे कान्हा, बाली उमरिया मोरी
ज्ञान की ऐसी मारी कंकरियां, मेरी देह की गागर
-- फिर क्या हुआ?
फिर सत्संग भा गयो रे, सांवरियां के प्यार में
कान्हा आयो रे...

प्रेम के रंग में रंगी चुनरियां, झूम-झूम लहराए
कृष्ण सदा है साथ में अपने, सोच-सोच इतराए
वाणी की भर-भर पिचकारी, तन-मन को लहराए
ऐसा डाल प्रेम का रंग, जो झूम-झूम मन जाए
फिर क्या हुआ?
फिर रास रचायो रे, गोपी संग कृष्ण मुरार ने
कान्हा आयो रे...

कितने सच्चे हैं

तर्ज : कितना प्यारा है ये चेहरा जिसपे हम मरते हैं

किनने सच्चे हैं कितने प्यारे हैं हमारे गुरु
इनसे मिलकर के यूं लगा कि मिल गए हैं प्रभु

इक रहमत भरी निगाह जो पड़ी है हम पर
अब तो लगता है जैसे जीवन हुआ है शुरू
कितने सच्चे हैं...

तेरी श्रद्धा तेरे विश्वास से भरा रहे मन
अपने ही प्रेम की लगन को बढ़ाए सतगुरु
कितने सच्चे हैं...

हाथ पकड़ा है तो, यह साथ कभी छूटे ना
तुम ही मेरे दिल पे करो राज मेरे ऐ सतगुरु
कितने सच्चे हैं...

कैसी मुरली बजाई श्याम ने

कैसी मुरली बजाई श्याम ने
मेरी सुध बिसराई श्याम ने
कैसा रास रचाया श्याम ने
मेरी सुध बिसराई श्याम ने

मुरली बजाई नाच नचाया
बड़ी धूम मचाई श्याम ने
मेरी सुध बिसराई श्याम ने
कैसी मुरली बजाई...

सुन सुन मुरली को जिया लहराए
दिल में उमंग मेरा मन लहराए
बड़ी धूम मचाई श्याम ने
मेरी सुध बिसराई श्याम ने

बड़ी भनक पड़ी मेरे कानों में
नींद न आई मेरे नैनन में
ओ मेरी निंदिया चुराई
मेरी सुध बिसराई श्याम ने
कैसी सुध...

काहे घबराए

तर्ज : सर जो तेरा चकराए दिल डूबा जाए

क्यों मन तेरा घबराए क्यों दिल डूबा जाए
सत्गुरु प्यारे संग हमारे काहे घबराए-2
सुन-सुन-सुन, अरे प्रेमी सुन गुरु सुनाए मीठी आत्मा की धुन
सारे दुखों की एक दवा है क्यों न आजमाए...

गुरु मौज का सागर है रहता है बेगमपुर की नगरी
जो भी इस नगरी में आए चमके किस्मत उसकी
सुन-सुन-सुन-सुन गुरु ने लिया है हम सबको चुन

सत्संग है सुंदर बगिया बड़े प्रेम से गुरु ने सींचा
हर भक्त यहां एक फूल है रहे प्रेम में भीगा-भीगा
सुन-सुन-सुन गुरु प्रेम में होकर गुम
खुदी को अपनी आज मिटा के मस्ती में आ जाए

गुरु प्रेम का सागर है प्रेम से भर दी दिल की गागर
बूंद समाई सागर में तो बूंद भी हो गई सागर
सुन-सुन-सुन गुरु सुनाए मीठी आत्मा की धुन
अपनी हस्ती को आज मिटाओ आत्मा में टिक जाए
सारे गमों से छूट गया ये मन अब तो मौज मनाए
काहे घबराए...

कोई नहीं मेरा तेरे सिवा

तर्ज : लाल मेरी पत रखियो भला झूले लालण

कोई नहीं मेरा तेरे सिवा सत्गुरु व्यारियां
प्रेमियां दा दुखिया दा इक तू ही सहारा
तेरा नाम प्यारा जय हो
तेरा ऊंचा द्वारा जय हो
जो कोई दर ते आवे जय हो
खाली कदी न जावे

सारे सहारे छड़ दर तेरे आईयां
नाम दी खैर पावी सत्गुरु साईयां
होर नहीं कुछ लोड वे सत्गुरु

संगता दा संग मिले, भाग जगावां मैं
चरण कमल दी सेवा कमावां मैं
होर नहीं कुछ लोड वे सत्गुरु...

सेवा भक्ति मैनूं लगे तेरी प्यारी
दर्शन तेरे तो मैं जावा बलिहारी
निभ जाए मेरी तोड वे सत्गुरु...

खुशियां ही खुशियां

तर्ज : खुशियां ही खुशियां हो दामन में जिसके

खुशियां ही खुशियां भर दी दामन में
क्यों न खुशी से दिल दीवाना हो जाए
ऐसे पावन गुरु को पाकर
जीवन हमारा सफल क्यों न हो जाए

देर से समझा मन ये हमारा शुक्र है ये समझ तो गया
गुरु वचनों का सार सुहाना जीवन में अपने उतर तो गया
इतनी सी अब अपनी तमन्ना अब
तो ये जीवन गुरु का ही हो जाए

मंदिर में ढूंढ़ा तीर्थ में ढूंढ़ा कहीं नजर में न आया हमें
गुरु ने ऐसी दृष्टि बना दी सबमें ब्रह्म दिखाया हमें
लख-लख शुकराने हैं गुरु के
सबमें प्रभु का ही नूर नजर आए

भटके हुए इस मन को आखिर मंजिल अपनी मिल गई
जन्म-जन्म के आवागमन से मुक्ति हमको मिल ही गई
कलियां ही कलियां महका दो . ऐसे
कि आबाद दिल का ये वीराना हो जाए
खुशियां ही खुशियां...

खुशियां लेके दिन

तर्ज : दूल्हे का सेहरा सुहाना लगता है

खुशियां लेके दिन ये सुहाना आया है
भक्तों का भगवान धरा पर आया है
चांद तारों ने किया हंसकर स्वागत
और हवाओं ने तराना गाया हैऽऽऽ
आज इस धरती पे खुशियों के नजारे हैं
मेरे सत्गुरु ने दिखाए दर्शन प्यारे हैं
रूप सलोना सबके मन को भाया है
भक्तों का भगवान...

प्यार का लेकर खजाना आप आए हैं
दीप खुशियों के हजारों जगमगाए हैं
तेरी आभा ने गुलशन महकाया है
भक्तों का भगवान...

तेरे चेहरे की निराली शान पे वारी
बस गई है मन में सबके मूरत ये प्यारी
दर्शन करके चंदा भी शरमाया है
भक्तों का भगवान...

आंखों में प्रभु तेरी ऐसा मैखाना है
जिसपे तेरी नजर हो वो होता दीवाना है
नाम का अमृत सत्गुरु ने बरसाया है
भक्तों का भगवान...

खिली दर्शन दी गुलजार

तर्ज : लेके पहला-पहला प्यार

खिली दर्शन दी गुलजार कैसी छाई है बहार
आज भगता दे घर भगवान आ गए...

मुदता ते बिछड़ी मैं सजन मनांनी सां
दिन रात तेरी याद विच मैं बितांदी सां-2
पाया आज मैं दीदार दिल हो गया ठंडा ठार
आज भक्ता दे घर...

प्यारे गुरु घर आए, जग पईया गलीयां
दिल विच खुशियां ने चेहरे लालियां-2
आई सच्ची सरकार जी मैं जावां बलिहार
आज भक्ता दे घर...

सत्गुरु नैया मेरी तेरे हवाले
चाहे तू सम्भाले चाहे न सम्भाले
साड्डी है ओ ही पुकार मैनूं लगा लो चरणा नाल
आज भक्ता दे घर...

खुशियों की बेला आई रे

तर्ज : पुरवा सुहानी आई रे

खुशियों की बेला आई रे, आई खुशियां
प्रेम की बाजे शहनाई रे, आई खुशियां
आज रुके नहीं पांव नाचो झूमो गाओ आज
दादा ने खुशियां बरसाई रे, आई खुशियां

मौसम है सुहाना तेरी प्रीत सुहानी लाऽऽऽ
तेरे प्रेम में हम हुई दीवानी
तेरे संग जीना है तेरे संग मरना है
कसमें हमने उठाई रे, आई खुशियां...

करते हैं हम बस तेरी ही पूजा लाऽऽऽ
तेरे सिवा मन को भाए न दूजा
तुम हमारे लिए साकार रूप धरकर
आए हो कृष्ण कन्हाई रे, आई खुशियां...

जब से मिला है हमें प्यार तुम्हारा लाऽऽऽ
भीगा है तन मन हुआ उजियारा
चांद सूरज करे पाए तेज तुमसे
तेरे ही शुकराने गाए रे, आई खुशियां...
तेरी कुर्बानी से खिले फुलवारी लाऽऽऽ
रंग बिरंगी चुनी कलियां प्यारी
लाखों फूल खिले गुलशन में तेरे दादा
तुमसे बहार आई रे, आई-खुशियां....

गुरु से तुम प्यार करो

तर्ज : किसी से तुम प्यार करो तो फिर...

गुरु से तुम प्यार करो, गुरु पे ऐतबार करो
कहीं न फिर देर हो जाए
इन्हीं को दिल चुराने का अंदाज आता है गुरु से तुम...

अमृत का जाम है मिले जितना कम है
ये तो जमाना नहीं जान पाएगा
मेरा वो परम है, करता रहम है
लेकर वो दर्द सबका मुस्कराएगा
दिल को ऐसे दिलबर पर नाज होता है गुरु से तुम...

सत्संग की बिंदिया ये सबको लगाएगा
आत्मा का कर दे सबका शृंगार है
ज्ञान की पायल सबको पहना के
करते ये नजरों से सबको प्यार है
आशिकों की आंख में ये राज होता है गुरु से तुम...

मुबारक समां है, खुशी का जहां है
ये दिन कोई तो नया गुल खिलाएगा
नजर से बयां है ये वो दास्तां है
चाहत को कोई कैसे छुपाएगा
जैसे प्रेमी को प्रियवर से प्यार होता है गुरु से तुम...

गुरु शरण में आइए

तर्ज : लग जा गले, कि फिर ये हंसी रात हो न हो

गुरु शरण में आइए, सर को झुकाइए
करके हृदय से वंदना, भव मुक्ति पाइए

हमको मिले हैं सत्‌गुरु इतने नसीब से
इनकी कृपा बरस रही इतने करीब से
यूं ना समय गंवाइए, चरणों में आइए
करके हृदय से वंदना...

सत्‌गुरु गुणों की खान है, मुक्ति का द्वार है
वाणी पे जो अमल करें, वो भव से पार है
जोड़े वो सबको प्यार से मन को सजाइए
करके हृदय से वंदना...

गुरु की कृपा तो ज्ञान है, हम ले सकें तो लें
गुरु ध्यान है गुरु मान है, हम दे सकें तो दें
श्रद्धा ही इसका मोल है, ये मान जाइए
करके हृदय से वंदना...

सत्‌संग है एक आईना, खुद को निहारिए
गुरु की कृपा से अब सभी जीवन संवारिए
जो भी है दिल में आपके, खुल के बताइए
करके हृदय से वंदना...

गुरु को तो सब मानते हैं

तर्ज : तुम अगर साथ देने का वादा करो

गुरु को तो सब मानते हैं गुरु की माने बिना तो मुक्ति नहीं
गुरु वचनों पर हरदम चलते रहें
और इसके सिवाय कोई युक्ति नहीं
माया आनी जानी और फिसलन भरी
भूलकर भी दिल इससे लगाना नहीं
लाख चौरासी भटके तो नर तन मिला
इसको विषयों में वृथा गंवाना नहीं
उम्र तो पल-पल ही घटती रहे
लाख रोको इसे तो रुकती नहीं

अहंकार की जिसमें दीमक लगी
वो भला वृक्ष कैसे फूले फले
नम्रता में ही तो अमरता छिपी
दुश्मनों को भी अब तो लगा ले गले
झुकती डाली वही जिसमें फल है लगा
बिना फल वाली डाली तो झुकती नहीं

हमको शिकवा शिकायत किसी से नहीं
शुकरानों में बीते है हर रात दिन
गुरु तेरे दरश की है प्यास लगी
रात कटती है अब तो तारे गिन-गिन
सत्‌गुरु की रजा में राजी रहें
इससे बढ़कर कोई भी भक्ति नहीं

गुरु ब्रह्मा विष्णु है

तर्ज : थोड़ा सा प्यार हुआ है

गुरु ब्रह्मा विष्णु है, गुरु पूरण ब्रह्मज्ञानी
गुरु ही चांद हमारा होऽऽ गुरु ही पूरणमासी
ज्ञान और प्रेम से तेरे होऽऽ बदली सबकी जिंदगानी

तेरी भक्ति है पूरण, तेरी दृष्टि है पूरण
तेरी वाणी है पूरण तेरी रहमत है पूरण
पूरा हमें प्यार दिया है होऽऽ
और किया सबको पूरण
क्या करूं तुझको अर्पण, ना वस्तु तीनों लोक में
किया जीवन समर्पित प्रभु तेरे चरणों में
तेरी रहमत से सत्गुरु होऽऽ
आज संवरा है जीवन

मेरे भगवन तुम्हीं हो मेरे स्वामी तुम्हीं हो
मेरे रहवर तुम्हीं हो मेरे गुरुवर तुम्हीं हो
तुमने सब दे दिया है, कोई कमी न बाकी

जुबां लाऊं कहां से, जो गाए महिमा तुम्हारी
कितने अहसान हैं तेरे कितनी है मेहरबानी
महिमा तेरी बड़ी है और जुबां है ये छोटी

गुरु ने ऐसा ज्ञान दिया है

तर्ज : थोड़ा सा प्यार हुआ है

गुरु ने ऐसा ज्ञान दिया है अब कोई चाह न बाकी
तेरे चरणों में रहेऽऽऽ होऽऽऽ जब तलक जान है बाकी

कितनी करूणा है गुरु में
मिले पूरण ब्रह्मज्ञानी
जन्मों से भटके हुए थे
गुरु ने बांहें थामीं
एक मन गुरु को दिया
दूसरा है न बाकी...

तेरे कदमों में आकर
ज्ञान तेरा है पाया
तकदीर बदली हमारी
बंधनों से है छुड़ाया
तुम जो मिल गए सत्गुरु होऽऽ-2
मिल गई बंदगी सारी...

इश्क सत्गुरु से हुआ
दुनिया से क्या है लेना
छोड़ा दर-दर का भटकना
गुरु में जब खुदा को पाया
तुम्हीं मोहन हो हमारे होऽऽ
तुम्हीं कृष्ण कन्हैयाऽऽऽ

गुरु आने से हो गई भोर

तर्ज : म्हारे हिवड़ा में नाचे मोर

गुरु आने से हो गई भोर खिली दिल की कलियां
नाचे मन का ये मोर मिले हमें गुरु जी
बदला जीवन बदली हालत या बदला है नजरिया

गुरु प्रेम का गहरा सागर है नित प्रेम की उठती लहरें हैं
गुरु वचनों से गुरु दृष्टि से बदला-बदला मेरा जीवन है
मेरे सवालों का जवाब बन के मिले मोहे सांवरिया
बंधी प्रीत की ऐसी डोर हुई मैं बावरिया

ये दिन तो सुहाना आया है, गुरु दर्शन हमने पाया है
जो दिल, में छुपाकर लाए थे वो राज जुबां पर आया है
तेरी नैया में बैठ चुके चाहे ले जाओ कोई डगरिया
चाहे ले जाओ जिस ओर संग चलूंगी सांवरिया

ये चांद सितारे फीके हैं मेरे सत्गुरु के आगे
सदियों सोए थे भाग्य मेरे सत्गुरु आने से जागे
सब कुछ अर्पण गुरु को समर्पण कर दिया गुरु के आगे
मन करे न अब कोई शोर माने गुरु की बतियां

गुरु वचनों की छांव में

तर्ज : मेरी भीगी-भीगी सी पलकों में रह गए

गुरु वचनों की छांव में जो बैठे
बने उनके भाग्य संवर के
न जले वो प्रेमी विषयों की आग में
न ही वो माया को तरसे

मन का माया से मुक्ति का गुरु से रिश्ता समझ न पाए
मन के भरम से सच को न जाना हर पल ठोकर खाए
जो हम रहते अब भी भरम में भरते आहे मर-मर के
न जले वो प्रेमी...

मुझे बिन जाने गुरु पहचाने गुरु ने हृदय से लगाया
मुझे न मिला जो दुनिया में रहकर गुरु दर पर सब कुछ पाया
अब तो न छूटे मुझसे ये गुरु दर मेहर गुरु की न छूटे
न जले वो प्रेमी...

आज तो सुख है तेरा दिल खुश है दुनिया तुझे न बुलाए
कल तेरे दुख में कोई न था इक पल में ही भुलाए
मतलब की है ये दुनिया सारी रखती है पांव सम्भॅल के
न जले वो प्रेमी...

गीता भगवन तेरी कुर्बानी

तर्ज : इश्क में तो हर चीज मिट जाती है

गीता भगवन तेरी कुर्बानी याद आती है
तेरे जीवन से जीने की राह मिलती है
याद-याद-याद बस याद रह जाती है
हां तेरी याद-याद-याद

प्यार-प्यार-प्यार बस प्यार रह जाता
बनके शमा ये जिंदगानी बन गई है अमर कहानी
आए थे दिल पर चोट खाए दिल के घाव तूने है मिटाए
रोम-रोम तेरा शुकराना आज गाता है,
हां तेरी याद-याद-याद...

प्यार से तेरे दिलों में बना है हंसी ताजमहल
याद में तेरी ये जिंदगानी बनी है गजल
दिल के दरिया में खिलते हैं हंसी कमल
याद आते हैं तुम संग वो गुजरे हुए पल
मुश्किल राहों में तेरी याद देती है सम्बल
प्रेम करुणा के सागर मेरे गीता भगवन
ज्ञान से तेरे बना मेरा जीवन उज्ज्वल
तेरी नूरानी नजर के होके सदके
दिल करूं तेरे बलिदान के आगे सदके
तूने औरों के खातिर तन मन लुटाया है
बस प्यार-3 बस प्यार-3 रह जाता है

गीता भगवन की...

तर्ज : कर चले हम फिदा जानो तन...

गीता भगवन की सुन लो कुर्बानियां
सुन के ऐसी बना लो जिंदगानियां

उसने सोचा कि जी के तो मरते सभी
मर के जीने की रुत तो फिर आती नहीं
सोचो तो उसने ये कैसे काम किया
जिसके साए में बैठे हैं हम सब सुखी

जिसके आगे कई रूप आए हंसी
उसने मन को कभी भी न डिगने दिया
हुस्न और इश्क भी जिसके सजदे में थे
ऐसे मौसम को भी उसने ठुकरा दिया
उसने भेंटे जवानी के पल मेहरबां...

उसने रुक के कभी मुड़के नहीं देखा
जग को रौशन किया बन के जलता दिया
देके अपनी बलि प्रण को पूरा किया
आत्मा के विजय ध्वज को फहरा दिया
ना बुझे ऐसी सच की वो जली शमा
ऐसे सत्गुरु के आगे झुके आसमां...

गुरु मुख इक पौधा

तर्ज : इक प्यार का नग्मा है

गुरु मुख इक पौधा है गुरु आज्ञा पानी है
सत्‌गुरु इसका माली, संतों ने बखानी है

गुरु खाद भी डालेंगे और पानी भी देंगे
आंधी और तूफानों से गुरु आप बचा लेंगे
पतझड़ से न घबराना ऋतु आनी जानी है
सत्‌गुरु इसका माली...

जैसे माली को अपना हर पौधा प्यारा है
हर फूल सत्‌गुरु की अंखियों का तारा है
हर फूल सुगंधित है हर फूल लासानी है
सत्‌गुरु इसका माली...

गुरु जो भी करते हैं सब अच्छा होता है
कांटों के संग अक्सर इक फूल भी रहता है
हम समझ नहीं पाए ये अपनी नादानी है
सत्‌गुरु इसका माली...

गुरु तू न मिलता तो क्या होता

गुरु तू न मिलता तो क्या होता।
गुरु न जगाता, तो मैं सोता॥

हर मोड़ पे तुमको है पाया,
इस दिल में तू ही तू समाया

नजरें करम जब तेरी पड़ती,
तेरे प्यार में मैं डूब मरती

ये ज्ञान और ये जिस्म तेरा,
कुरबान जाऊं मैं न मेरा

प्रेम शक्ति का यह खेल सारा,
प्रेम रूप मेरा और तुम्हारा

गुरु के मुख से निकला

दया कर दान भक्ति का
हमें परमात्मा देना
गुरु के मुख से निकला
हर वचन वरदान होता है,
जो सुनके चल पड़े वो ही,
असल विद्वान होता है।
गुरु के इक इशारे में,
भरी हैं रहमतें लाखों
यह हां कहदे या ना
दोनों में ही कल्याण होता है।

है वो हर बात दुखदाई,
जो हमने आप मनवाई
है सुख जिस बात में शामिल,
गुरु का ध्यान होता है।
वो कविता, गीत, वो सतसंग,
हो जिसमें रंग गुरुमति का,
किसी को हो ना हो
लेकिन इसे परवान होता है।

न जाने बैठने वाला
मगर मल्लाह सब जाने,
कहां पर है किनारा,
कहां तूफान होता है

गुरु शरण में आओगे

तर्ज : सावन का महीना, पवन करे शोर

गुरु शरण में आओगे तो समझोगे ये बात
रात के पीछे दिन होता है, दिन के पीछे रात

क्यों खिलता है फूल चमन में,
क्यों मुरझाए वृक्ष की पाती
क्यों चमके हैं नैनों के दीपक,
कौन बुझाए इसकी बाती,
गुरु शरण में...
कौन बिछाए सुख का बिस्तर,
कौन ओढ़ाए दुख की चादर
क्यों होवे पत्थर की पूजा,
कौन करे पत्थर को शंकर,
गुरु शरण में...
क्यों तूफान से निकले कश्ती,
क्यों मझधार में डोले नैया
क्यों साहिल आने से पहले,
टूट जाए है समय का पहिया
गुरु शरण में...
कौन करे है झोली खाली,
कौन भरे है सीप में मोती
कैसे अंधेरा छाए संशय का,
कौन जलाए विश्वास की ज्योति
गुरु शरण में...

चमका है जिंदगी में

चमका है जिंदगी में तकदीर का सितारा
तकदीर का सितारा गुरु जी-2...
तुम हो गए उसी के जिसने तुम्हें पुकारा
तुम हो गए उसी के, जो हो गया तुम्हारा

मेरी जिंदगी की कश्ती, चलते भंवर में डूबी
पतवार को सम्भालो मिल जाएगा किनारा-2
चमका है जिंदगी में...

दरस जरा दिखा दो, दर पर खड़ा हूं तेरे
तेरे दर का मैं पुजारी, तू है गुरु हमारा-2
चमका है जिंदगी में...

तेरे दर का मैं सवाली, भरे झोली सबकी खाली
जो तेरी शरण में आया सबको दिया किनारा-2
चमका है जिंदगी में...

तेरा आधार लेकर तेरा प्रकाश देखूं
तेरे बिना गुरु जी मेरा नहीं गुजारा-2
चमका है जिंदगी में...

चारों धामों से बढ़कर

चारों धामों से बढ़कर गुरु का ये दर
जय-जयकार करो जय-जयकार करो
आके मिलती है अद्‌भुत शक्ति
ऐतबार करो-ऐतबार करो...

राह पाएगा इक सवाली यहां
इस जीवन का मिलता है सार यहां
बिगड़ी किस्मत संवरती है सबकी यहां
ऐतबार करो-ऐतबार करो...

ज्यूं अंधेरे में सूरज निकल आया हो
मेरा साकार भगवन उतर आया हो
ऐसे पावन दर्शन गीता श्याम के
बार-बार करो बार-बार करो-2
ऐतबार करो-ऐतबार करो...

ये हकीकत है कोई बहाना नहीं
गुरु की रहमत का कोई ठिकाना नहीं
प्रेम तुमसे गुरु गंगाजल की तरह
स्वीकार-स्वीकार-स्वीकार करो
ऐतबार करो-ऐतबार करो...

चली गुरु प्रेम की हवा चली

तर्ज : चली-4 चली इश्क की हवा चली

चली-चली-चली-चली गुरु प्रेम की हवा चली
साथ सत्गुरु का पाया पहुंचे आत्म की गली

गुरु तूने सच्चा प्यार दिया जीवन को संवार दिया
कैसे भूलेंगे अहसान दिया मुक्ति का वरदान
तेरी कृपा से खिलती है दिल की मुरझाई कली

मिला तुमसे ये वरदान मिटा जन्मों का अज्ञान
तू ही शिव है तू ही राम तू ही जीसस तू ही श्याम
रूप सबका तुझमें पाया तू ही है वलियों का वली

जब से तूने अपनाया मिटा दुखों का है साया
कोई शंका न भरम है नहीं बनता अब करम है
जीते जी मुक्ति का आनंद मिल गया-मिल गया
चली...चली...

चलो सखी उस देश

चलो सखी उस देश जहां पिया बसे हमारे
मिट जाए सारे कलेश, जहां पिया बसे हमारे

उस नगरी की क्या है निशानी
बाज रही जहां अनहद वाणी
मुरली बजे हमेशा, जहां पिया बसे हमारे
चलो सखी उस देश...

जगमग ज्योति जले दिन राती
उत देखूं जिन पायो झाती (झलक)
रहंदे मस्त हमेशा जहां पिया बसे हमारे
चलो सखी उस देश...

ढूंढ़-ढूंढ़ थकी ते सार न मिलन्दी
सत्गुरु चाभी दीती उस घर दी
पहुंचो अपने देश, जहां पिया बसे हमारे...

बादल गरजे बिजली चमके
ओत्थे जिन्हीं दा दिल पियो धड़के
पहुंचे अपने देश जहां पिया बसे हमारे...

जो कुछ है इस घर के अंदर
प्रीतम विराजे मन दे अंदर
क्यों अटके परदेश, जहां पिया बसे हमारे...

दासी ने विरथा जन्म गंवाया
प्रीतम दी खोज विच लग जावां
वहीं है अपना देश, जहां पिया बसे हमारे...

जब से तेरे दर पे

तर्ज : इक परदेसी मेरा दिल ले गया

जब से तेरे दर पे आना जाना हो गया
जिंदगी का सफर सुहाना हो गया

पाया जो सत्‌गुरु दर्शन तेरा
मिट गया सारा मेरे मन का अंधेरा
मेरे दिल का रोशन आशियाना हो गया
जिंदगी का सफर सुहाना हो गया

बड़ी मुद्दत से मिला ये लाल है
मेरे सत्‌गुरु जी का दर ये कमाल है
देख इसका रूप मैं दीवाना हो गया
जिंदगी का सफर...

तुम जो कहो वो करके दिखा दें
गुरु वचनों पर चल के दिखा दें
गुरु चरणों में अब ठिकाना हो गया
जिंदगी का सफर...

सब कहते हैं तेरा दीवाना
तेरे मेरे प्यार का भेद न जाना
तेरे मेरे प्यार का अफसाना हो गया
जिंदगी का सफर...

जागे रे जागे रे भाग्य मेरे जागे

तर्ज : कांची रे, कांची रे प्रीत मोरी सांची

जागे रे जागे रे भाग्य मेरे जागे
संतों के संग नाता जोड़ के होऽऽऽ
भागे रे भागे रे भरम सारे भागे
संतों के संग नाता जोड़ के

तिनका था रस्ते में पड़ा हुआ
दुनिया के रंग में रंगा हुआ
तूने उठाया गले से लगाया
अब न जाऊंगी तुझे छोड़ के जागे रे जागे...

माया के बंधन सच्चे नहीं
जो कोई आए यहां टूटे नहीं
तू ही किनारा तू ही सहारा
आ जाओ सब इस डोर में जागे रे जागे...

सत्‌गुरु जैसा कहीं कोई नहीं
दुनिया में ऐसा प्यार देखा नहीं
तू ही मेरा दाता तू ही विधाता
चरणों में आऊं अब छोड़ के जागे रे जागे...

तुझसे पाई मैंने प्रीत सच्ची
मेरी नैया है डूबने से बची
नाचूं मैं गाऊं सबको सुनाऊं
आ जाओ अब इस मोड़ पे जागे रे जागे...

जन्म-जन्म का साथ है

तर्ज : जन्म-जन्म का साथ है

जन्म-जन्म का साथ है हमारा तुम्हारा
तुम्हारा हमारा, हमारा तुम्हारा

गवाह हमारे प्यार के सूरज चांद सितारे
त्रेता में तुम राम बने और हम वानर थे सारे
द्वापर में हम ग्वाल बने, तुमने कृष्ण रूप था धारा
जन्म-जन्म का साथ है...

कलियुग में तुम सत्गुरु संत रूप धर आए
कई कोटि जीवों में हम तेरे प्रेमी कहलाए
युगों-युगों से तुमसे बंधे हैं ये सौभाग्य हमारा
जन्म-जन्म का साथ है...

सपने में भी सत्गुरु ये बंधन न छूटे
तुमसे प्रेम पुराना संग कभी न छूटे
प्रीत का मारग अति सरल है तेरा एक सहारा
जन्म-जन्म का साथ है...

हर पल ध्यान हों तेरा ये ही विनय हमारी
आठों पहर आंखों में बसे ये मूरत प्यारी
मरते-मरते हो नाम लबों पर प्रेमी कहे पुकारा
जन्म-जन्म का साथ है....

जरा मटकी सम्भाल बृजबाला

जरा मटकी सम्भाल बृजबाला-2
आया वो आया नंदलाला-3

बातों-बातों में तेरे मन को चुराएगा
मन को चुरा के तेरे हाथ न आएगा
इसे तू न समझ भोला भाला
आया वो आया नंदलाला

दर्शन दिखा के कहीं लुक छुप जाएगा
सुध न रहेगी ऐसी मुरली सुनाएगा
बड़ा नटखट है ये, मुरली वाला
आया वो आया नंदलाला

वाणी सुना के कान्हा मन को लुभाएगा
रास रचा के तन मन में समाएगा
नंदलाला का खेल है निराला
आया वो आया नंदलाला

ज्योत से ज्योत जलाओ

ज्योत से ज्योत जलाओ सत्गुरु
मेरा अंतर तिमिर मिटाओ

हे योगेश्वर हे ज्ञानेश्वर
हे सर्वेश्वर हे परमेश्वर
निज किरपा बरसाओ सत्गुरु...
सत्गुरु ज्योत से ज्योत...

हम बालक तेरे द्वार पे आए
मंगल दरश दिखाओ सत्गुरु...
सत्गुरु ज्योत से ज्योत...

सांची ज्योत जले हृदय में
प्रेम सुधा बरसाओ
सत्गुरु ज्योत से ज्योत...

शीश शुकाऊं करूं तेरी आरती
चरनन शरण लगाओ
सत्गुरु ज्योत से ज्योत...

जीवन मुक्ति आनंद अविनाशी
सोहम नाद बजाओ
सत्गुरु ज्योत से जोत...

जय गीता भगवान

तर्ज : ओम जय जगदीश हरे

जय गीता भगवान
मेरे प्यारे गीता भगवान
आपकी महिमा गावें,
हर क्षण और दिन रात

ज्ञान की रोशनी दी है,
आपने जीवन में प्रभु
प्रेम आनंद ही मिलता-2
अब इस संगत में

आत्म ज्ञान का वृक्ष लगाया
आपने मधुबन में-2 प्रभु
शीतल छाया मिल गई-2
अब इस आंगन में...

करुणा का जल तुमने
बहाकर कर दिया हमें पावन-2
फूल खुशी के बांटे-2
पलट दिया जीवन ओउम्...प्रभु

आपकी शक्ति वो है
अमावस को करे पूनम-2 प्रभु
आपका नाम जपा करूं-2
जब निकले मेरा दम ओउम्...

जिसको जीवन में मिला सत्संग

जिसको जीवन में मिला सत्संग है
उसको हर घड़ी आनंद ही आनंद है

तुलसी मीरा कबीरा ने गाया
सूरदास ने भी दर्शन पाया
जिसके रोम-रोम में बसे गोविंद हैं
उसको हर घड़ी...

जिसका जीवन सच्चाई में ढल गया
उसके पापों का पर्वत ढह गया
उसके चौरासी कट गए फंद हैं
उसको हर घड़ी...

संत ऋषियों की वाणी को मानो
सच क्या है जगत का ये जानो
जिसके हृदय में राम नाम बंद है
उसको हर घड़ी...

मुक्ति पाने की इच्छा नहीं है
स्वर्ग जाने की इच्छा नहीं है
जिसके मन में इच्छाओं का अंत है
उसको हर घड़ी...

तू ही बता

तर्ज : ईश्वर तुम्हीं दया करो तुम बिन हमारा कौन है

तू ही बता मेरे प्रभु
तेरे सिवा मैं क्या करूं
तेरी शरण को छोड़कर
किसकी शरण में जा पड़ूं

चांद से रोशनी आ रही
तारों में जगमगा रही
मन का दीया तू ही जला
दीपक जला के क्या करूं
तू ही बता...

फूलों में हंस रहा हैऽऽऽ तू
कलियों में खिल रहा है तू
पर्वत की चोटी पे तू ही तूऽऽऽ
मंदिर में जाके क्या करूं
तू ही बता...

गंगा की लहरों में तू ही तूऽऽ
यमुना की लहरों में तू ही तू
जल और स्थल में तू ही तू
तीरथ नहा के क्या करूं
तू ही बता...

तेरे अहसान को सतगुरु

तेरे अहसान को सतगुरु
न भूलेगा जहां बरसों
तेरी रहमत की वाणी को
दोहराएगी जुबां बरसों

तेरे कदमों पे चलकर ही
जनम मेरा सफल होगा
झुकाएगा अदब से सर
जमाना सब यहां बरसों
तेरे अहसासन का सतगुरु...

तेरे आने से गुलशन में
बहारें लौट आई हैं
जो सूना था मेरा गुलशन
न मुरझाए यहां बरसों
तेरे अहसानों का सतगुरु...

हम अपनी राह मंजिल से
न भटकें एक पल को भी
चाहे दुनिया के लाखों लोग
लेंगे इम्तहां बरसों
तेरे अहसानों का सतगुरु...

तेरे संग डोर बंधी है

तर्ज : थोड़ा सा प्यार हुआ है थोड़ा है बाकी

तेरे संग डोर बंधी है ओ जन्मों के साथी
तू ही तू है मेरा बस तू मेरा सच्चा साथी

मेरी राहों के कांटे, तूने जो चुन लिए हैं
आंखों के आंसू तूने तो पी लिए हैं
तेरी यादों में बीते जब तलक उम्र है बाकी
तेरे संग डोर बंधी है...

तूने तो दे दिए हैं इन लबों को शुकराने
तूने तो भर दिए हैं खुशियों के तराने
तूने अपना बनाया तेरी मेहरबानी
तेरे संग डोर बंधी है...

तू तो करूणा का सागर रात दिन बरसता है
मैं बोलूं या ना बोलूं तू तो सब जानता है
आ गया दर जो तेरे हो गया फिक्रो से खाली
तेरे संग डोर बंधी है...

तेरे हवाले मेरी गाड़ी

तेरे हवाले मेरी गाड़ी तू जाने तेरा काम जाने
तू जाने तेरा काम जाने तू जाने तेरा काम जाने

छोड़ दिया सब भार तुम्हीं पर
जीत तुम्हीं पर हार तुम्हीं पर
अब तो आस तुम्हारी, तू जाने...

जब से सत्गुरु शरण में आई
जीवन आनंद की बहार है आई
मिट गई चिंता सारी, तू जाने...

दिल में बस गया दिलवर प्यारा
भक्तों की आंखों का तारा
तुझपे जाऊं मैं वारी, तू जाने...

इक भरोसा एक ही आशा
चरणों में सत्गुरु तेरे अरदासा
रखना लाज हमारी, तू जाने...

आंखों के रस्ते तू दिल में आया
रोम-रोम, नस-नस में समाया
मेरी तुम संग प्रीत मुरारी, तू जाने...

मंजिल तक पहुंचाओगे तुम
भव से पार लगाओगे तुम
मौज से करेंगे सवारी, तू जाने...

तेरी इबादत ने दिल को है

तर्ज : तेरी मोहब्बत ने दिल में मुकाम कर लिया

तेरी इबादत ने दिल को है शाद कर दिया
मेरे वीराने मन को फिर से आबाद कर दिया

जब से लगी है तेरी लगन
दूर हुए मन के भरम
तेरा प्रभु दीदार हुआ
दूर मेरा अंधकार हुआ
नाम तेरे ने हर मुश्किल
को आसान कर दिया

जिसपे हुई है तेरी नजर
भव से गया वो पार उतर
महिमा अपरम्पार है
तू सच्ची सरकार है
तेरा सिमरन करके सत्गुरु
सब है पा लिया

दिल में लगी इक आस प्रभु
बनके रहूं तेरा दास प्रभु
प्रेमी पर ये उपकार करो
सपना मेरा साकार करो
मैंने सिर अपना सत्गुरु
चरणों में रख दिया

तेरे ज्ञान का सहारा

तर्ज : उठेगी तुम्हारी नजर धीरे-धीरे

तेरे ज्ञान का जो सहारा मिला है
मंदिर का हमको दुवारा मिला है

जीवन की नैया चली जा रही थी
तेरे दर पे आके किनारा मिला है
तेरे पास...

सांसों को रस्ता पता ही नहीं था
चलने का इनको इशारा मिला है
तेरे ज्ञान का...

प्रभु की जो मूरत बनाई थी दिल में
गुरु रूप में जो हमारा मिला है
तेरे ज्ञान का...

तुम करो गुरु संग

तर्ज : मुझे मिल गया मन का मीत दुनिया क्या जाने

तुम करो गुरु संग प्रीत
अमृत बरसेगा बरसेगा नित बरसेगा-2

दया धर्म से प्रीति कर लो
भवसागर से पार उतर लो
तेरा हो जाए बेड़ा पार
अमृत बरसेगा...

सत्य नाम का पहनो गहना
कड़वे बोल किसी से ना कहना
तेरा हो जाएगा उद्धार
अमृत बरसेगा...

ओम नाम का अमृत प्याला
पी ले बनकर किस्मत वाला
गुरु मिले ना बारम्बार
अमृत बरसेगा...

तू है कमाल मौला

तू है कमाल मौला, तू है कमाल...
तेरी कुदरत कमाल तेरी रहमत कमाल
कब किसको क्या दे दे तेरा दिल है विशाल

गाते जाओ गाते जाओ महिमा गुरु की गाते जाओ
हर पल गाओ पल-पल गाओ शुकराने ही गाते जाओ

हम तो आए थे जीव बनकर माया की जंजीर में बंधकर
तेरी करुणा जो बरसी है जीव हुआ भगवान रे तू है...

मन ने था हमें बहुत सताया द्वैत ने बुद्धि को उलझाया
तेरे ज्ञान के वचनों से ही मन की सीधी चाल रे तू है...

तेरे प्रेम की बात निराली खुशियों से तूने भर दी झोली
अचाह करके राजा बनाया प्रेम से मालामाल हुए, तू है...

फिर ना मिलेंगे ऐसे सत्गुरु वक्त न यूं ही गंवाओ
आ जाओ, आ जाओ गुरु शरण में आ जाओ
तू है कमाल मौला...

तन वारां कि मैं मन वारां

तर्ज : घर आया मेरा परदेसी

तन वारां कि मैं मन वारां
समझ न आए की वारां।

तेरे प्यार ने श्याम मैनूं पागल कीता ए
इस पगली दा दिल तूसी हर लीता ए
हार वारां कि श्रृंगार वारां
समझ न आए की वारां...

तेरा मुखड़ा वेख मैं निहाल हो गई
जदो दर्शन तेरा पाया मालोमाल हो गई
जान वारां कि जहान वारां
समझ न आए की वारां...

बड़ी मुद्दत दे बाद अज दर्शन पाया ए
शोभा दर्श दी सुन चन्न निकल आया है
इक-इक श्वांस तेरे उत्ते वारां
समझ न आए की वारां...

जिंद नाम वाले रंग विच रंग लीती ए
इस पगली ने जिंद जान वार दीती ए
सारे जग दिया खुशियां तेरे उत्ता वारां
समझ न आए की वारां...

तुम प्राण हो हमारे

तर्ज : हम प्यार हैं तुम्हारे दिलदार हैं

तुम प्राण हो हमारे, भगवान हो हमारे
तुमसे मिला जीवन तुमने दिया जीवन
कोई तुझसा नहीं इस जहां में सतुगुरु
तुझसे मिला जीवन, तुमने दिया जीवन
दादा तुमने प्यार बेशुमार किया है
अपना सारा जीवन हम पर वार दिया है
गिरतों को उठा के, पलकों में बिठाना
रोतों को हंसाना अपने में समाना
फिर निष्काम प्यार से दिल में घर बनाना
आत्मा की धुन से मन को भगाना
तुम साथ हो हमारे तुम पास हो हमारे
तुमसे मिला जीवन...

आत्मा का प्याला भर-भर के पिलाया
आत्मा के नशे में ही मस्त बनाया
खुदी को हटाना, खुदा से मिलाना
जीवन ये बनाया, अपने में समाया
ये काम हैं तुम्हारे मेहरबान हैं हमारे
तुमसे मिला जीवन...

भक्तों के दिलों में करते हो बसेरा
शमा बन जले तुम तब हुआ सवेरा
मेरी हर श्वांस में है सुमिरन अब तेरा
आठों पहर ध्यान अब तेरा ही तेरा
तुम जान हो हमारी पहचान हो हमारी
तुमसे मिला जीवन...

तेरे चरणों का सहारा

तर्ज : मुझे और जीने की चाहत न होती

तेरे चरणों का सहारा न होता तो हम नहीं होते-2
तेरी कृपा की दृष्टि गर मुझ पर न पड़ती

गहरी थी नदिया नाव थी पुरानी
बीत रही थी यूं ही जिंदगानी
मांझी बनकर जो, इसको न खेते
तो हम नहीं होते...

भटक रही थी मैं, इस दुनिया में
सहारा दिया गुरु जी, तेरी वाणी ने
आनंद बनके जो, जीवन में न आते
तो हम नहीं होते...

तुम्हें क्या बताऊं गुरु जी कि तुम मेरे क्या हो
मेरी जिंदगी के तुम्हीं देवता हो
शरण जो तुम्हारी गर, हमें नहीं मिलती
तो हम नहीं होते...

तू नैनों का तारा है

तर्ज : तू प्यार का सागर है

तू नैनों का तारा है प्राणों से भी प्यारा है तेरी चाहत के मारे हम-2
तेरी इक झलक पे गुरु-2 तन मन धन सब वारे हम-2
तू नैनों का तारा है...

घायल मन था टुकड़े-2 टूटे थे दिल के तार-2
निष्काम प्रेम से दिल को जोड़कर जोड़े हृदय के तार-2
जो कर ना सका कोई-2 तूने करके दिखलाया है
तू नैनों का तारा है...

जीवन की नैया के हिचकोले खाती थी मझधार-2
मांझी बनके तुमने उबारा पहुंचाया भव से पार-2
तू ही साहिल है मेरा-2 तू मेरा खेवणहार है
तू नैनों का तारा है...

बूंद समाई सागर में ये जाने है सब कोई-2
सागर समाया बूंद में ये जाने है विरला कोई
जीवभाव को लेकर के-2 तूने आत्मा में टिकाया है-2
तू नैनों का तारा है...

ज्ञान का दीपक प्रेम की बाती भक्ती की जोत जली-2
निष्काम भाव का तेल है डाला करुणा है दिल में जगी-2
सत्गुरु नाम की माला-2 सिमरूं मैं बार-बार हर श्वांस-2
तू नैनों का तारा है...

तुम तो यहीं कहीं सत्गुरु

तुम तो यहीं कहीं सत्गुरु मेरे आस पास हो,
आते नहीं नजर तुम, मेरे साथ-साथ हो।

बहते पवन के झोंके अहसास ये दिलाएं
संग संग हो हमारे, महसूस ये कराएं-2
सत्संग में आज भी गुरु, करते निवास हो।
तुम तो यहीं कहीं...

हमको तो ये यकीन है, तेरे साथ-साथ हैं,
तेरी दुआ से सत्गुरु, अब भी तो पल रहे हैं-2
हमको अपने प्यार का देते अहसास हैं।
तुम तो यहीं कहीं...

आती है हमको आज भी साकार भावना,
रोशन तुम्हीं से सत्गुरु हर दिल की आशना,
बन करके ज्ञान चंद्रमा देते प्रकाश हो।
तुम तो यहीं कहीं...

तेरे दर पे जबसे

तेरे दर पे जबसे, झुकाया है यह सर
तो मंजिल का पाना आसान हो गया है
न आंधी का खतरा, न तूफान का डर है
तू जबसे मिला है, नुमान हो गया है।

तेरे दर पे जबसे झोली फैलाई,
मुझे मिल गई है सारी खुदाई
तेरी दुनिया में जबसे मैं आ गया हूं,
तो रोशन मेरा कुल जहान हो गया है।

न जब मैंने पकड़ा था दामन यह तेरा,
मेरी दुनिया में था अरसों अंधेरा
हुई जबसे मुझ पर तेरी मेहरबानी,
तो सारा जहान मेहरबान हो गया है।

भटकती थीं दर-दर तेरी निगाहें
तो मुश्किल नजर आ रही थीं ये राहें,
मुश्किल से आसान नजर आ रही है,
तू जबसे मिला है, नुमान हो गया है।

तू था पास मेरे, न आता नजर था,
भटकता कभी मैं इधर था, उधर था,
जब से यह देखा है, जलवा तुम्हारा,
तो खुद में ही जलवानुमां हो गया है।

तुमको अपने दिल में

तुमको अपने दिल में बिठाया है बड़े नाज से
अपनी हस्ती को मिटाया, तेरे प्यार से॥

मुझको पहली नजर में लगा यूं
साथ सदियों पुराना है अपना,
रब मिला मुझको तेरी सूरत में,
मानो सच हो गया मेरा सपना,
तेरे सजदे में सर को झुकाते हुए॥

पीकर ज्ञान अमृत का प्याला,
हो गया मन मेरा मतवाला,
तुझसे निष्काम प्रेम को पाकर,
झुक गया सर यह अहंकार वाला
वचनों पर सदा तेरे चलते हुए॥

धरती कागज समुद्र स्याही,
दरख्तों की कलम मैं बना लूं
फिर भी महिमा लिखी नहीं जाए
इस जुबां से मैं कैसे सुनाऊं
रज चरणों की मस्तक लगाते हुए॥

तुम्हीं मेरे मालिक

तुम्हीं मेरे मालिक, तुम्हीं मेरे स्वामी,
तुम्हीं इष्टदेव और परमात्मा हो।
मैं हूं देह सत्गुरु, तुम हो प्राण मेरे
तुम्हीं मन के अंदर, मेरी आत्मा हो।

मेरे दिल की धड़कन, गुरु जी तुम्हीं हो,
मेरी आंखों की रोशनी भी तुम्हीं हो।
स्वासों के साजों की आवाज तुम्हीं हो,
तुम्हीं जिंदगी का मेरी आसरा हो।

तुम्हारे सिवा नेह किससे लगाऊं,
मोहब्बत की दौलत तुम्हीं पे लुटाऊं,
मुझे औरों से गर्ज क्या गरज मेरे सत्गुरु
तुम्हीं मन के मंदिर में मेरे देवता हो।

मेरा पूर्व जन्मों का बंधन कटाया,
गुलामी की माया से मुझको छुड़ाया,
अधम जीव को अपना सेवक बनाया,
हमेशा तेरी मुझ पर ऐसी कृपा हो।

मुझे अपने चरणों का सहारा तो दीजिए,
मेरे मन को दृढ़ भाव भक्ति में लीजिऐ,
मनोरथ यह दावा, तेरी दया हो,
मगर दिल मेरा यह, तुम पर फिदा हो।

तुमसे प्यारा इस दुनिया में

तर्ज : तुमसे बढ़कर दुनिया में न देखा कोई और

तुमसे प्यारा इस दुनिया में,
लगता न कोई और,
कन्हैया आज दिल की बात जान ले॥

महिमा तुम्हारी है निराली,
भक्तों की करते रखवाली,
जो भी तेरे दर पे आया,
भर दी झोली खाली॥

नैनों में तू ही समाया,
सर पर तुम्हारा ही साया,
हर पल छवि तुम्हारी निहारूं,
नाचे मन का मोर॥

गिरतों को तुमने है उठाया,
अंधेरे में दीपक जलाया,
जिस पर तूने नजर है डाली,
हो गया मालोमाल।

तेरे दर से जिसे मोहब्बत है

तेरे दर से जिसे मोहब्बत है,
फिर उसे और क्या जरूरत है।

हर घड़ी उसकी चैन से गुजरे,
जिसपे होती तेरी इनायत है।

जन्मों-जन्मों के गुनाह माफ करे,
ऐसी सत्गुरु की यह अदालत है।

उसकी कुटिया महल से है ऊंची,
नाम की जिसके पास दौलत है।

तेरे दर पे कभी नहीं देखी,
जिसको जिस चीज की जरूरत है।

तेरे चरणों में आहूति देकर,
हर घड़ी कितनी खूबसूरत है।

तेरे दर पे बैठा है

तेरे दर पे बैठा है तेरा दीवाना,
तेरी आस लेकर आया दास तेरा,
चरणों में अपने दे दो ठिकाना।

मेरे दिल में प्रभु आपका वास हो,
आरजू है यही, तू मेरे पास हो,
अगर नींद आ जाए, सत्गुरु जी मुझको,
तो सपनों में आकर दरस दिखाना।

इक तेरी बंदगी ही मेरा काम हो,
यह मेरी जिंदगी बस तेरे नाम हो,
तुम्हें भूल जाऊं यह मुमकिन नहीं है,
मगर सत्गुरु तुम भी न भुलाना।

इक तुम्हारे सिवा कौन मेरा यहां,
छोड़कर दर तेरा और जाऊं कहां,
तुम्हारे ही दम पर, मेरी खुशी है,
तुम्हारे लिए है मेरा हर तराना।

आस दिल में लिए मैं जीए जाऊंगा,
तेरे दर्शन का अमृत पीए जाऊंगा,
कभी तो सुनेगा तू मेरी सदाएं,
मेरे घर में होगा, कभी तेरा आना।

तेरी रहमत का दादा जी

तर्ज : मुझे तेरी मोहब्बत का सहारा

तेरी रहमत का दादा जी, भरा भंडार देखा है,
पत्थर को मोम कर डाले, तेरा वह प्यार देखा है।

तेरे चरणों में देखी है, बरकत दो जहानों की
मुरादें पूरी होती हैं, इसी दर से दीवानों की,
झोलियां तुझसे ही भरता, सकल संसार देखा है।

तेरी पूजा करे दिल से, उसी के भाग्य खुलते हैं,
दर्शन मेरे सत्गुरु के, बड़ी किस्मत से मिलते हैं,
तुम्हें निराकार देखा है, तुम्हें साकार देखा है।

हो कर के प्रेम का जादू, अजब कारीगरी देखी,
तुम्हें देते नहीं देखा, सभी झोली भरी देखी,
वास भक्तों के हृदय में, तेरा साकार देखा है।

ऋषि-मुनि ढूंढ़ते तुमको, ध्यान तेरा लगाते हैं,
देवी देवता ज्ञानी सारे, भेद तेरा न पाते हैं,
नहीं तुझसा कोई जग में, कभी अवतार देखा है।

तेरा आना

तर्ज : तेरा जाना दिल के अरमानों का लूट जाना

तेरा आना, मुरझाई बगिया का खिल जाना,
करूं मैं क्या, सत्गुरु तूने कर दिया दीवाना।।

चुपके से तुम आ गए,
मन वाणी में समा गए,
सोए भाग्य जगा गए।

तूने ऐसा जाम पिलाया है,
मैंने तन का होश भुलाया है,
पर होश का होश कराया है

मैंने श्रद्धा सुमन चढ़ाया है,
तूने अमृत रस बरसाया है,
आनंद में मुझे डुबाया है

ब्रह्मानंद दर्शा दिया,
मुझे मेरा रूप लखा दिया,
योग ये योग बता दिया।

कहते जनमों का काम है,
तूने पल में किया तमाम है,
मन में पाया विश्राम है।

तुझको पुकारे गुरु का प्यार

तर्ज : तुझको पुकारे मेरा प्यार

तुझको पुकारे गुरु का प्यार हो,
मनुआ मुक्ति खड़ी है तेरी राह में।।

कितने युगों तक ठोकरें खाईं मनुआ माया की तूने
तज के प्रभु की उंगली है पकड़ी मनुआ छाया की तूने
पाएगा कैसे करार...

लाख चौरासी, चक्कर खाकर पाया नर तन का चोला,
आखिरी जनम है, गंवा न इसे तू है यह बड़ा अनमोला,
गुरु वचनों से इसे संवार...

भटक रहा था दर-2 फिर भी तुझको मिला न सहारा,
जैसे भंवर में, फंसी हुई नैया को, मिले न कोई किनारा,
आ गए खेवनहार...

जो साहिब सद सदा हजूरे ताको जाना है दूरे
सब घट हरि का दर्शन कर ले हो जाए काम तेरे पूरे,
सत्गुरु है कृष्ण मुरार...

तेरा हाथ जिसने पकड़ा

तर्ज : जो तुमको हो पसंद वही बात करेंगे

तेरा हाथ जिसने पकड़ा, वह रहा न बेसहारा,
दरिया में डूबकर भी, उसे मिल गया किनारा।।

सत्गुरु से जो मिला है, कहीं और क्या मिलेगा,
यह ऐसा सिलसिला है, भगवन से जा मिलेगा,
डूबा जो प्रेम सागर, मिलता उसे किनारा।।

मन ढूंढ़ता उसी को, जिसने इसे बनाया,
जब भी जुबान खोली, उसका ही गीत गाया,
सुनता है प्रभु उसकी, जिसने उसे पुकारा।।

झूठी है दुनिया सारी, झूठे हैं मीत मिलते,
जो बने हैं आज अपने, कल वो ही पार दिखते,
समझा है जिंदगी ने, बड़े काम का इशारा।।

दिया है प्यार

तर्ज : रेशमी सलवार कुर्ता जाली का

दिया है प्यार भंडार सत्गुरु प्यारे ने
कर दिया मालोमाल सतगुरु प्यारे ने
दिया सुंदर परिवार सत्गुरु प्यारे ने...

मैंने देखा नहीं दिखाया सत्गुरु ने रब से मिलाया
हम भटक रहे थे गुरु ने बांह पकड़ के पार लगाया
खिला दिया गुलजार सत्गुरु प्यारे ने, कर दिया...

मैं जब-जब गुरु को देखूं मेरे दिल में जले फुलझड़ियां
मैं करूंगी तेरा पीछा चाहे लग जाए हथकड़ियां
कर दिया मुझे निहाल सत्गुरु प्यारे ने, कर दिया...

जो लगन लगाए सच्ची रहे उसकी नाव न अटकी
बेड़े को पार लगाया, नहीं देर करी दो पल की
मिटा दिया जंजाल सत्गुरु प्यारे ने, कर दिया...

मेरे सत्गुरु मेरे साथी, इस दिल में है तेरी झांकी
तेरी बंशी की धुन सुन के सोई हुई शक्ति जागी
कर दिया साज श्रृंगार सत्गुरु प्यारे ने, कर दिया...

जैसी जो भावना लाया वैसा ही वो फल पाया
नहीं खाली उसे लौटाया, वो मन ही मन हर्षाया
कर दिया मुझे निहाल सत्गुरु प्यारे ने कर दिया...

दीवानों का मेला

दीवानों का मेला है सत्संग बेला
ये जन्नत नहीं है तो फिर और क्या है
यहां मेरा आना, आके न जाना
ये किस्मत नहीं है तो फिर और क्या है

मिली जबसे महफिल तो कहने लगा दिल
यहां से मुझे उठ के जाना नहीं है
जिसे ढूंढ़ता था यही है वो मंजिल
कहीं और मेरा ठिकाना नहीं है
कि तुमसे हमारी कि हमसे तुम्हारी
मोहब्बत नहीं है तो फिर और क्या है

नहीं था नहीं था मैं तुम्हारे काबिल
किया फिर भी मुझको अपनों में शामिल
मिला जबसे मुझको ये दामन तुम्हारा
न मरने का डर है ना जीना है मंजिल
कहे दुनिया सारी ये मुझपे तुम्हारी
रहमत नहीं है तो फिर और क्या है दीवानों का मेला...

इन आंखों को ऐसा जलवा दिखाया
मुझे तुमने अपना दीवाना बनाया
तुम्हारे सिवा अब नजर कुछ न आए
यूं रंग मुझपे अपना चढ़ाया
ये ऐसी खुमारी कि मुझपे तुम्हारी
इनायत नहीं है तो फिर और क्या है दीवानों का मेला...

दुनिया में ऐसा कहां...

दुनिया में ऐसा कहां सबका नसीब है
कोई-कोई अपने गुरु के करीब है

लाख बिछाए कोई राहों में कांटें
प्रीत बिछा दी जाए राहों में तारे
प्रीत दीवानी की कहानी भी अजीब है
दुनिया में ऐसा...

तू ही है जीवन साथी सतगुरु प्यारे
प्यार में छूटे हैं ये झूठे सहारे
तू ही है दिलवर मेरा, तू ही मन मीत है
दुनिया में ऐसा...

ना चाहूं हीरे मोती सतगुरु प्यारे
अब मुझे मिल गया ज्ञान का गहना
तू ही है मांझी तो किनारा भी करीब है
दुनिया में ऐसा...

दे दी हमें आजादी

दे दी हमें आजादी बिना खड्ग बिना ढाल
शरणागति के संत तूने कर दिया कमाल
सब मिल बोलो हरि-हरि ओउम
प्रेम से बोलो हरि-हरि ओउम

जग में नहीं है माया मेरे मन में थी माया
इस माया को है कैसे तूने मार भगाया
फिर मन ही मन में ब्रह्म का स्वरूप
मैं कैसे करूं शुक्रिया तेरा ओ बेमिसाल

ना देखा तूने छोटा और बड़ा भी न देखा
देखा जो देखा बस अपना आप ही देखा
मैं वारी जाऊं देख तेरा रूप अनोखा
सबको गले लगाया तेरा दिल है विशाल

श्रद्धा का पात्र लेके तेरे दर पे जो आया
उसको है तूने ज्ञान का अमृत ही पिलाया
चौरासी उसकी काट जीवन मुक्त बनाया
मिटा के देह अध्यास उसकी कायम की मिसाल
शरणागति के संत तूने...

दरबार ये तुम्हारा

तर्ज : हम यार हैं तुम्हारे दिलदार हैं तुम्हारे

दरबार ये तुम्हारा, दीदार ये तुम्हारा
हमको मिला रहे, हमको मिला रहे
कर-कर के तेरा दर्शन मन होता है पावन
हरदम खिला रहे, हरदम खिला रहे

तुम छोड़ के अर्श को आए हो फर्श पे
भगवान हो हमारे, संतों का रूप धरकर
दर्शन ये प्यारा-प्यारा सत्गुरु जी तुम्हारा
हमको मिला रहे, हमको मिला रहे

ना राम हमने देखा ना कृष्ण हमने देखा
इक तेरे रूप में ही भगवान हमने देखा
तेरे रूप का नजारा तेरे प्यार का सहारा
हमको मिला रहे, हमको मिला रहे

इक तेरे रूप में ही सब देवता हैं आए
इक तेरे नाम में ही सब तीर्थ समाए
सिर पर हाथ हो तुम्हारा इक साथ हो तुम्हारा
हमको मिला रहे, दरबार ये तुम्हारा हमको मिला रहे

दादा का ज्ञान निराला

तर्ज : कजरा मोहब्बत वाला

दादा का ज्ञान निराला, सबके मन को रंग डाला
सत्गुरु ने बदली मन की चाल
वाह हम गुरु पे कुर्बान...

हीरा ना मोती मांगे ना हम सौगात मांगे
जीवन जो बदले हमारा ऐसा सद्ज्ञान मांगे
जीवन खुशहाल कर दे गुरु इतना प्यार दे

मोह माया को सत्गुरु हमारे मन से निकाला
मनुवा में बस के पिलाया ज्ञान अमृत का प्याला
ज्ञानी बनाए सत्गुरु-2 अपनी शरण में लेके भगवान

जीवन हमारा सत्गुरु तेरी अमानत है ये
जैसा तू चाहे रंग दे तेरी इनायत है ये
अरजी हमारी सत्गुरु मरजी तुम्हारी
सत्गुरु अर्पण है जीवन तेरे नाम दादा का ज्ञान...

दादा का ज्ञान न भूलें गीता का प्यार न भूलें
श्याम भगवान का सच्चा सद्मार्ग न भूलें
तर गए भवसागर हम तो अमृत पीकर
दिया जो हमको मुक्ति धाम दादा का ज्ञान...

निश्चय तुम गुरु संग कर लो

तर्ज : समझौता गमों से कर लो

निश्चय तुम गुरु संग कर लो
मुश्किलों से सत्गुरु मिलते हैं
देह आनी जानी छाया है
इक सच्चा आनंद हैं होऽऽऽ

सत्गुरु कहते हैं तू रूप मेरा
मन के भरम ने है तुझको घेरा
मन की आंखें खोलकर देख,
स्वरूप है तू मेरा निश्चय तुम गुरु संग...

सत्गुरु मुख से बहे अमृतधारा
जप लो उसको इक वही है सहारा
श्रद्धा और विश्वास से मिलेगा तुमको किनारा
निश्चय तुम गुरु संग...

वचन गुरु के तुम पीते जाना
जीवन अपना तुम सफल बनाना
सत्गुरु के चरणों में बीते जीवन मेरा होऽऽऽ

आगे पीछे है वही समाया बीच में उसने ये खेल
रचाया रचिता की रचना में भूला अपना साया

भीतर से वो करे इशारा आनंद कुछ तुझमें समाया
रातों के आंचल में जैसे छिपा है सूरज प्यारा
निश्चय तुम गुरु संग...

प्रेम सुधा बरसाता

तर्ज : कजरा मोहब्बत वाला

प्रेम सुधा बरसाता, भर-भर के जाम पिलाता
मन की आंखें खोल, सत्गुरु वचन अनमोल

मेरे दिल में रहता मेरा हजूर है
सच्ची लगन हो दिल में करता भरपूर है
कण-कण में वो ही रम रहा
झोली भर-भर के दे रहा
दामन न अपना सिकोड़

आत्म रस पीकर प्यारे
विषयों के रस तज सारे
जीना है मौज से जी ले
काहे तू हिम्मत हारे
गुरु के वचन तू पाए जा
सत्संग में नित आए जा
मस्त करे दिन रैन कहीं न सुख चैन

ऐसा बसा है मन में
जैसे व्यापक हो कण-कण में
तेरा ही नूर समाया
हर एक दिल के आंगन में
अंखियों का नूर तू है
दिल का सरूर तू है
तेरे जैसा नहीं कोई और...

प्रेम तेरा खींच लाया

तर्ज : आपकी नजरों ने समझा प्यार के काबिल

प्रेम तेरा खींच लाया ये तो है किस्मत मेरी
दादा के निष्काम से तो बदली है जिंदगी मेरी

सत्गुरु की इक नजर ने
मुझको अपना कर लिया
कैसे तुझको मैं भुलाऊं
तेरा इक आधार मिला
प्रेम तूने है सिखाया,
प्रेम ही जिंदगी मेरी
प्रेम तेरा खींच लाया...

क्या से क्या हूं बन गया
तेरा ये अहसान है
तू है कितना मेहरबान
मुझको ये अहसान है
दादा तू है दिल में मेरे
और ये दिल भी है तेरी
प्रेम तेरा खींच लाया...

सच ही है मंजिल हमारी
सच हमारा मीत है
सच के खातिर मिट जाएंगे
सच में समाई जीत है
अपना सा हमें तो बनाया
मेहर है दादा तेरी
प्रेम तेरा खींच लाया...

प्रेम हमारी साधना है

तर्ज : चांद सी महबूबा हो मेरी

प्रेम हमारी साधना है, प्रेम हमारा पंथ है
जो भरा है प्रेम से वो ही सच्चा संत है

प्रेम ही मंदिर प्रेम ही मूरत प्रेम ही भगवान है
प्रेम के ही थाल में सब पूजा का सामान है
प्रेम ही दीपक, प्रेम ही बाती प्रेम ही पावन मंत्र है
प्रेम हमारी साधना है...

वेद हो या गुरु की वाणी, रामायण या गीता हो
वो ना समझेगा इसे जो घट प्रेम से रीता हो
प्रेम का जो पाठ पढ़ाएं वो ही सच्चा ग्रंथ है
प्रेम हमारी साधना है...

नफरत के जो गीत हैं गाते मजहब सब वो झूठे हैं
धर्म के नाम पर हम आपस में क्यों रूठे हैं
घृणा का पतझड़ मिटे, जब खिलता प्रेम का बसंत है
प्रेम हमारी साधना है...

प्रेम के बल पर टिकी है ये धरती और आसमां है
ढाई आखर सीखा जिसने, उसका रूप महान है
प्रेम की महिमा है सनातन आदि है न अंत है
प्रेम हमारी साधना है...

पिला दे वे श्यामा राम नाम दी

पिला दे वे श्यामा राम नाम दी मस्ती
इस मस्ती दे खातिर साहिब
असां मिटा लई हस्ती

इक-इक बूंद दे खातिर साहिबा जान मंगे ता देवां
जान दे बदले बूंद मिले वा भी जानो सस्ती
पिला दे वे श्यामा

तेरी मेरी कोई शर्त नहीं है कोई भी रंग पिला दे
पीवण वाले ऐ नहीं पुछदे महंगी है या सस्ती
पिला दे वे श्यामा...

नाम पियाला पीवण वाले मौत कोलू नहीं डर दे
रबदी रजा बिच राजी रहंदे शिकवा कदी न कर दे
पिला दे वे श्यामा...

ऐसा जाम पिला दे साहिबा होश बेहोश तू कर दे
जे तेरे कोलू प्याला नहीं है, बुक्का नाल पिला दे
पिला दे वे श्यामा...

सारे द्वारे छड़ के साहिबा पाया तेरा द्वारा
बंसदा रहे तेरा मैखाना बणी रहे तेरी हस्ती
पिला दे वे श्यामा...

सदके तेरे मैखाने तू रज-रज मैनूं पिला दे
पीके मैं सुध बुध भूल जावां ऐसी चढ़ जाए मस्ती
पिला दे वे श्यामा...

प्रेम की गंगा बहती है

तर्ज : लाल दुपट्टा उड़ गया मेरा

प्रेम की गंगा बहती है यहां गुरु के सत्संग में
ज्ञान की गंगा बहती है यहां गुरु के सत्संग में
किस्मत वाले होते हैं जो आते इस दर पे
गुरु तो मेरा मुरली वाला है गुरु तो मेरा श्याम प्यारा है

लाख छुपो हमसे मोहन हमने तुमको जान लिया
साधारण सा वेष बना हमको गीता ज्ञान दिया
मेरी मुरली का जादू, ऐसा सब पर छा गया
अब तो हरेक रूप में दिखने लगा मुझको खुदा
मुझे प्रेम सिखाया शुकराना जीवन ये बनाया शुकराना
आ जाओ जिसे पार है जाना गुरु की कश्ती में

महका-महका ये समा अमृत की बरसात है
लूट लो जितना जी चाहे, करते गुरु पुकार है
मानव जन्म फिर न मिले सोच समझ ले ज्ञान से
अंतिम जन्म है ये तेरा भर ले इसे प्यार से
मुझको झुकना सिखाया मुझे उड़ना सिखाया
नारायण तो आ ही गया देखो कलियुग में

तेरी खुशबू से महका हर आंगन हर बाग है
तेरी रहमत से चमके देखो ये दिन और रात हैं
धरती अम्बर आसमां देखो तेरे गुण हैं गा रहे
ब्रह्मा विष्णु शंकर तेरा ध्यान लगा रहे
मुझे शेर बनाया शुकराना मुझे ब्रह्म बनाया शुकराना
पूर्व जन्म के पुण्य फले हैं पाया जो तुमको
किस्मत वाले होते हैं...

पाया जो दीदार

पाया जो दीदार मैंने सच्चे यार का
हो गया दीवाना मैं तो सरकार का

तेरे सिवा अब मुझे कुछ नहीं भाता है
हर समय तू ही बस याद मुझे आता है
नशा मुझे चढ़ गया तेरे प्यार का
हो गया दीवाना मैं तो...

सुन गुण तेरे मैं दर तेरे आया था
श्रद्धा के साथ मैंने सर को झुकाया था
सिर पे जो हाथ रखा तूने प्यार का
हो गया दीवाना मैं तो...

कैसे सुनाऊं मुझे अब क्या हो गया
नाम ध्यान तेरे में मैं तो हूं खो गया
सब कुछ भूल गया संसार का
हो गया दीवाना मैं तो...

आंखों में मेरी हर समय तू ही रहता है
मुझको लगे तू मुझसे यही कहता है
यही फल देता हूं मैं दीदार का
हो गया दीवाना मैं तो...

बेशक हाजिरा हजूर है

बेशक हाजिरा हजूर है पर मिलने से मजबूर है
मुर्शिद बिना खुदा बंदे से बहुत दूर है

मुर्शिद के कदमों से तेरा सर जितनी दूर है
तुझसे तेरा खुदा बंदे उतनी ही दूर है
गुरु बिन ज्ञान न मिले ये मिसाल मशहूर है
मुर्शिद बिना खुदा...

पानी में रहकर मछली को पानी की प्यास है
कस्तूरी मृग है ढूंढ़ता जो उसके ही पास है
ऐसे ही भगवान भी कण-कण में भरपूर है
मुर्शिद बिना खुदा...

जिसका दिया तू खा रहा उसकी पहचान कर
प्रभु की पहचान के लिए गुरुदेव का दर है
जो उसको मंजूर है वो खुदा को भी मंजूर है
मुर्शिद बिना खुदा...

पागल जमाने भर को इतना बता दे तू
जिसकी है आरजू तुझे वो तेरे जुस्तजू
प्रेमी पहचान को एक सजदा भी जरूर है
मुर्शिद बिना खुदा...

बाजे श्वांसों की शहनाई

बाजे श्वांसों की शहनाई
सत्गुरु भक्तों के घर आए
आज खुशियों से अंखियां रो पड़ीं
कर दी सत्गुरु ने पवित्र मेरी झोंपड़ी

आज सपना ये सच हुआ गरीब का
दिन बदल गया है मेरे ही नसीब का
मिली ममता की छांव लागे धरती पर न पांव
आज खुशियां मनाने की है घड़ी
कर दी सतगुरु ने...

जैसे राम जी ने शबरी को तारा था
वैसे कृष्ण जी ने विदुर को निहारा था
ऐसे हैं मेरे सत्गुरु दाता
वो तो सबके भाग्य विधाता
उनकी सेवा में रहूंगी मैं खड़ी
कर दी सत्गुरु ने...

आज जाने न दूंगी किसी और के
मैं तो बांध लूंगी ममता की डोर से
है निर्दोष के रखवाले
वो तो सबके पालनहारे
उनके चरणों में रहूंगी मैं खड़ी
कर दी सत्गुरु ने पवित्र मेरी झोंपड़ी...

वो तो आ गए माखन मिश्री खाने
भोग श्रद्धा और भाव के लगाने
यहां रूखी सूखी खाएं बिना चुपड़ी
कर दी सत्गुरु ने पवित्र मेरी झोंपड़ी...

बांके बिहारी तेरे नैन कजरारे

बांके बिहारी तेरे नैन कजरारे
नजर न लग जाए ओए-3

मोर मुकुट शीश पे शोभा पाए
मुखड़े को देख-देख चांद भी लजाए
अधरों से छलकी मीठी रस की फुहारेऽऽऽ

मीठी कटारी दोनों नैनों में कजरा
बाल है तिहारी जैसे सावन के बदरा
गालों पे छाए काले-काले घुंघरालेऽऽ
नजर न लग जाए...

मोहिनी सूरत तेरी लगे है कमाल की
वारी-वारी जाऊं तेरी मस्तानी चाल पे
करती पायलिया तेरी मीठी छनकोरऽऽऽ
नजर न लग जाए...

कान्हा बचाऊं तोहे सबकी नजर से
आज छिपा लूं तोहे नैनों के घर में
सुन मेरे प्यारे इस दिल की पुकारऽऽऽ
नजर न लग जाए...

मेरा चैन वैन सब उजड़ा

तर्ज : कजरारे-कजरारे तेरे कारे-कारे नैना

मेरा चैन वैन सब उजड़ा जालिम नजर हटा ले
बेहोश हो रहे हैं जी तेरे प्यार के दीवाने होऽऽऽ
मन की शहनाई यूं बोले ओ कान्हा-2
कजरारे-कजरारे तेरे कारे-कारे नैना
तेरे नैना-2 मेरे लूट के ले गए चैना

चंदा शरमाए तेरे आगेऽऽ
ऐसा तेरा रूप है प्यारे होऽऽ
हरेक में है छवि तेरी प्यारी,
जाऊं छवि पे तेरी बलिहारी
तेरी तिरछी अदा तड़पाती है
मेरा चीर कलेजा जाती है
ओ आजा-2 क्यों देर है लगाई
होऽऽऽऽ मन की शहनाई यूं बोले तू....

आंखें भी कमाल करती हैं,
दिल पे सीधा वार करती हैं
होऽऽऽऽ ऐसा प्रेम का जादू है
तेरा हरेक को ये अपना बनाती हैं
तेरी अदा ये हमसे छुपती नहीं
ये निगाह भी तुमसे हटती नहीं
ओ आजा-2 क्यों देर है लगाई
होऽऽऽ मन की शहनाई यूं बोले तू...

पहले मिलना था तेरे सत्संग में
ये निशानी दिलाई सत्संग में
देखा तूने था जब पहली नजर में
हो गया था दीवाना सत्संग में
होऽऽऽ काली कमली वाले को याद करके
तेरे मीठे-मीठे वचनों की कसम खाते हैं
तेरे मीठे-2 वचनों की कसम ले लूं
तेरे वचनों पर मैं सजदा करूं
ओ आजा-2 क्यों देर है लगाई...

मेरी मंजिल सतगुरु का दरबार है

तर्ज : दिल के अरमा आंसुवों में बह गए

मेरी मंजिल सत्गुरु का दरबार है।
ये ही मथुरा काशी और हरिद्वार है

बहुत घूमा बहुत भटका दर बदर
अब मिले मुझको ये भगवान हैं
मेरी मंजिल सत्गुरु...

द्वापर में जब कंश का अत्याचार हुआ
कृष्ण का लिया उसने अवतार है
मेरी मंजिल सत्गुरु...
त्रेता में बनके खबर ली राम की
राक्षसों का कर दिया संहार है
मेरी मंजिल सत्गुरु...

कलयुगी जीवों के तारन के लिए
मेरे दादा ने लिया अवतार है
मेरी मंजिल सत्गुरु...

प्रेम के सर्वस्व मेरे सतगुरु
बेसहारों का तू ही रखवाला है
मेरी मंजिल सत्गुरु...

मेरे सत्‌गुरु से बड़ा कौन भला

तर्ज : तेरे पास आके मेरा वक्त गुजर जाता है

मेरे सत्‌गुरु से बड़ा कौन भला दाता है
जो भी आता है यहां मन भर के ले जाता है

तेरे दरबार में जब प्रेम के प्याले छलके
जो भी पीता है वो मदहोश हुआ जाता है
जो भी आता है यहां...

तेरी फुलवारी में जब ज्ञान के फूल झरते हैं
जिसपे गिरते हैं वही मस्त हुआ जाता है
जो भी आता है यहां...

तूने मेरे मन के शीशे को कुछ ऐसे धोया
इसमें अब तेरा ही अक्स नजर आता है
जो भी आता है यहां...

तूने इस भवसागर को सुखाया ऐसे
जो भी चलता है वही पार उतर जाता है
जो भी आता है यहां...

मेरे कान्हा होरी को है त्योहार

मेरे कान्हा होरी को है त्योहार
विरज में हल्ला है भारी
हो सांवरिया होरी है धुंवाधार
बिरज में हल्ला है भारी

आयो फागुन रंग रंगीली
लाल गुलाबी नीलो पीलो
होऽऽ मेरे कान्हा रंगन की उड़े फुहार

जमुना जल मेरे केसर धोरी
भर लाए हैं आज कमोरी
होऽऽ मेरे कान्हा सब खेल रहे रे जर जार...

बाजे ढोलक चंग नगारे
झूम-झूम नाचे हरयारे
होऽऽ मेरे कान्हा! तेरी बोले जय-जयकार...

हिल मिल के सब रसिया गावें
रंग होरी में खूब जमावे
होऽऽ मेरे कान्हा नरसी संग रामोवतार
गोपियन संग कृष्ण मुकार
बिरज में हल्ला है भारी मेरे कान्हा...

मीरा बदनाम हो गई

मीरा बदनाम हो गई कन्हैया तेरे लिए
कन्हैया तेरे लिए गोपाला तेरे लिए

महलों में गई होगी, तुझको न पाया होगा
सिर धुन-धुन रोई होगी कन्हैया तेरे लिए
मीरा बदनाम हो गई...

राणा ने जहर का प्याला मीरा को भेजा होगा
गटागट पी गई होगी कन्हैया तेरे लिए
मीरा बदनाम हो गई...

महफिल में दीवानों की मीरा जब गई होगी
छमाछम नाची होगी कन्हैया तेरे लिए
मीरा बदनाम हो गई...

भक्तों ने पूछा मीरा योगी क्यों वेष धारा
कुछ नहीं बोली मीरा कन्हैया तेरे लिए...
मीरा बदनाम हो गई...

मैया-मैया-मैया

तर्ज : दैया-दैया-दैया रे...

मैया-3 रे तेरा ये कन्हैया रे, रंग डारे है
मैया रे तेरो ये कन्हैया रे
होरी में बरजोरी रंग डाले छलिया रे

मौसम है रंगों का दिल की उमंगों का
उड़ता है रंग और गुलाल
मगर खींचता क्यों चुनरिया हमारी
ये नटखट बड़ो तेरो लाल
ये माना कि फागुन की मस्ती है छाई
मगर तेरा कान्हा है सताए
मैं पानी पे जाऊं तो पनघट पे कान्हा
मटकी को फोड़ गिराए-2 होऽऽऽ मैया...

जो प्रेम का रंग मोहे डाले कन्हैया
तो हो जाए अपनी ही होरी
चोरी से चुपके से रंग डारे मोहे
ये भीगे चूनर मोरी सारी
प्रेम के रंग में रंगा तूने ऐसे
रंग गई टोली सारी होऽऽ मैया...

मैं भी तो चाहूं कान्हा को रंग दूंगी
खेलूंगी जी भरके होली
लागे भली मुझको कान्हा की बरजोरी
लागे प्यारी वाकी बोली
हां मगर तेरा कान्हा
ये नटखट कन्हैया जो करता है
रंग दे ये ऐसी हमारी ये चूनर
उसने किसी की न मानी होऽऽ मैया...

मुझे अब मिल गए सतुगुरु

तर्ज : मुझे तुम मिल गए हमदम

मुझे अब मिल गए सतुगुरु, सहारा हो तो ऐसा हो।
जिधर देखूं, उधर तुम हो, नजारा हो तो ऐसा हो।

तेरे आदर्श को लेकर, जीवन अपना सजाया है,
तेरी रहमत की वर्षा से, चमन अपना महकाया है
तेरी इस राह पर सतुगुरु, सांझ हो या सवेरा हो।
मुझे अब मिल गए...

मेरे इस तन और मन पर, सिर्फ अधिकार तेरा है
मेरे जीवन की पूंजी पर, सिर्फ अधिकार तेरा है
यह मैं जानूं या तू जाने, इशारा हो तो ऐसा हो।
मुझे अब मिल गए...

ज्ञान की धुन सुना करके, जगत मिथ्या बनाया है,
प्यार का जाम पिला करके, मुझे मदहोश बनाया है-2
मेरे जीवन को गढ़ डाला कारीगर हो तो ऐसा हो॥
मुझे अब मिल गए...

मां यशोदा तेरा नटखट कान्हा

तर्ज : हंसता हुआ नूरानी चेहरा

मां यशोदा तेरा नटखट कान्हा
रंग में रंग दे हमको दीवाना
कर दिया मुश्किल है आना जाना
फोड़े मटकी रे मारे निशाना रे, क्या करे...

वह तो खड़ा रस्ते में गोपियों के घेरे में
बंद किया आना जाना सांझ सवेरे में
ऐसा आता तेरा कान्हा, सीखा उसने हमको सताना
न ही वो किसी से है डरे...
मां यशोदा तेरा....

आप खाए और सारे ग्वालों को खिलाए
तोड़ फोड़ मटकी और दूध गिराए
है दीवाना तेरा कान्हा, जाने सारा कुल ये जमाना
कहां और जिएं हम मरे मां यशोदा तेरा...

मुझे किसने मोहब्बत से

तर्ज : प्रभु अपने दीवानों पे कुछ कर्म

मुझे किसने मोहब्बत से, सत्संग में पुकारा है,
यह किसका निमंत्रण है, यह किसका इशारा है।

नित अमृत वेले में, मुझे कौन जगाता है,
मीठे संकेतों से, मुझे कौन बुलाता है,
मुझे किसने सजाया है, मुझे किसने संवारा है।

मैं कौन हूं क्यों आया, मुझे कौन बताता है,
मेरा यह आत्मरूप, मुझे कौन लखाता है,
दुनिया के तापों से, मुझे किसने बजाया है।

यह कैसा आकर्षण, यह कैसा है रिश्ता,
बन रहा फरिश्ता मैं, आहिस्ता-आहिस्ता,
सत्संग के झूले में, मुझे कौन झुलाता है।

यह प्रभु का निमंत्रण है, यह गुरु का इशारा है।
मुझे तुमने मोहब्बत से, सत्संग में पुकारा है।
यह तेरा निमंत्रण है, यह तेरा इशारा है।
दुनिया के तापों से, मुझे तुमने बचाया है
मुझे तूने सजाया है, मुझे तूने संवारा है॥

मेरे सतगुरु तुम्हारी मैं करूं वंदना

तर्ज : मौला बुला ले मदीने मुझे

मेरे सतगुरु तुम्हारी मैं करूं वंदना
हाथ जोड़ वंदना है चरण वंदना...

बालू विच सीपी, सीपी विच मोती
मोतियन सो ज्ञान तुम्हारे अंदरा
मेरे सतगुरु तुम्हारी...

जल विच कमल, कमल विच कलियां
कलियन सो ज्ञान तुम्हारे अंदरा
मेरे सतगुरु तुम्हारी...

रवि विच किरण, किरन विच ज्योति
ज्योति सो ज्ञान तुम्हारे अंदरा
मेरे सतगुरु तुम्हारी...

शरण तुम्हारी आए गुरु हम
ज्ञान प्रकाश करो अंदरा
मेरे सतगुरु तुम्हारी...

मुझे सब कुछ तुमने दे दिया

तर्ज : दिल चोरी साडा हो गया हुन की करिए...

मुझे सब कुछ तुमने दे दिया अब्र क्या मांगूं क्या मांगूं
मुझे आशीष तुमने दे दिया अब क्या मांगूं क्या मांगूं

मुझे दुनिया से क्या काम मेरी मंजिल तेरा धाम
हम हो गए तेरे गुलाम गुरु चरणों में तुमने ले लिया
अब क्या मांगूं...

मैं धन दौलत न मांगूं न मांगूं चांदी सोना
मैं तो बस दाता मांगूं तेरे दिल का छोटा कोना
तेरे दिल का कोना मिल गया अब क्या मांगूं...

तेरी भक्ति मेरा जीवन तेरी पूजा मेरा जीवन
तेरा दर्शन मेरा जीवन तेरी सेवा मेरा जीवन
मैं तुझपे अर्पण हो गया अब क्या मांगूं...

जब कोई साथ नहीं था तब तुमने साथ निभाया
जब हाथ सभी ने खींचा तब तुमने हाथ बढ़ाया
तू मेरा साथी बन गया अब क्या मांगूं...

मिलता है जब मुर्शिदे कामिल

तर्ज : याद में तेरी जाग-जाग के हम

मिलता है जब मुर्शिदे कामिल, तभी रब का दीदार होता है
हर घड़ी बंदगी में कटती है, हर लम्हा रब से प्यार होता है

जिसको देखा नहीं निगाहों से,
उसकी तारीफ क्या करे कोई,
यह हकीकत है इस हकीकत को,
हां करे या कि न करे कोई,
हो न महबूब सामने जब तक,
दिल को कब ऐतबार होता है

तुझको अल्लाह कहूं या राम कहूं,
तुझको मैं कृष्ण कहूं या श्याम कहूं
जर्रे-जर्रे में तेरा जलवा है,
तुझको मैं खास या कि आम कहूं,
एक सजदे में बात बन जाए,
सत्गुरु जब निहाल होता है

उम्र गुजरी कि तू वहीं पर है,
कैसी पूजा ये क्या इबादत है,
पांच चोरों ने तुझको लूटा है,
नाज करना हमारी आदत है,
छोड़कर देख आदतें अपनी,
पल में तेरा उद्धार होता है

जब तलक राह न कोई हासिल हो,
नाम से काम चल नहीं सकता,
बिन निशाने जो तीर मारोगे,
कुछ नतीजा निकल नहीं सकता,
एक सजदे में बात बन जाए,
सत्गुरु जब निहाल होता है मिलता है जब...

मेरे सत्गुरु का दरबार

मेरे सत्गुरु का दरबार बड़ा प्यारा,
सारे भक्तों का यही है सहारा,
हमें जग वालों से क्या लेना, क्या लेना।

उसकी महिमा अजब निराली,
उसके दर से न जाए कोई खाली,
मन में विश्वास यह कर लो,
वह तो करता है सबकी रखवाली,
वह तो सदा अंग संग, रहे मन में उमंग।

ऐसी आत्म-जोत जलाई,
झूठा जग सारा देता दिखाई
घट-घट में दर्शन कर लो,
ऐसी ज्ञान की मुरली बजाई,
ऐसी प्रीत बंधी, जो टूटे न कभी।

सत्गुरु वचनों को माने,
और अपने को पहचाने,
गुरु कृष्ण रूप बन आए,
गीता का ज्ञान सुनाने,
वही है मेरी नैया और वही तो खिवैया,
हमें जग वालों से क्या लेना।

मुझे तूने सत्गुरु

तर्ज : तुम्हीं मेरे मंदिर, तुम्हीं मेरी पूजा

मुझे तूने सत्गुरु, सब कुछ दिया है,
तेरा शुक्रिया है-2 जो भी दिया है, अच्छा दिया है।

न मिलती अगर मुझको यह दान तेरी,
दुनिया में क्या थी, औकात मेरी,
तुम्हीं ने तो जीने के काबिल किया है॥

तू ही है मालिक मेरी जिंदगी का,
सहारा है मुझको तेरी बंदगी का,
जो कुछ लिया है, तुम्हीं से लिया है।

मिला है खजाना बदौलत तुम्हारी,
जीवन बगिया खिली है हमारी,
उसे क्या कभी जो तेरा हो गया है।

हुकुम तेरे का तलबदार हूं मैं
तेरी रहमतों का कर्जदार हूं मैं
दिया मैंने कुछ नहीं, लिया ही लिया है।

तेरे प्यार में ऐसी तासीर दादा,
आवागमन से सहज ही छुड़ाता,
जन्मों का भटका था, अपना लिया है।

मेरो अंग-अंग दियो रंग

मेरो अंग-अंग दियो रंग
श्याम ने मारी पिचकारी
श्याम ने मारी पिचकारी

होली ने ऐसो रंग जमायो
सब लाल गुलाल बनायो
ढप ढोलक की ताल मुरलिया
बाज रही प्यारी
मेरो अंग-अंग दियो...

मेरे सिर माखन की मटकी
गवालन जमुना तट की-2
बेदर्दी ने दई फोर
लिपट गई माखन मेरे सारी...
मेरो अंग-अंग दियो...

मेरे सत्गुरु तेरी नौकरी

तर्ज : जिंदगी की न टूटे लड़ी...

मेरे सत्गुरु तेरी नौकरी,
सबसे बढ़िया और सबसे खरी,
तेरे दरबार की चाकरी,
सबसे बढ़िया और सबसे खरी,

मैं नहीं था किसी काम का,
जबसे तेरा सहारा मिला,
तबसे चमकी है किस्मत मेरी।

जबसे तेरा गुलाम हो गया,
तबसे मेरा भी नाम हो गया,
वरना औकात क्या थी मेरी।

काम भी कोई मुश्किल नहीं,
मिल गई है जो मंजिल सही,
कभी न छोड़ूं तेरी नौकरी।

तनख्वाह भी कोई कम नहीं,
न मिले तो कोई गम नहीं,
हो गई दुनिया से बरी।

छुट्टी लूंगा नहीं मैं कभी,
जब तलक है मेरी जिंदगी,
स्वास जब तक चले आखिरी।

खुशनसीबी का जब फूल खिले,
तब ये खुशियों भरा दिल मिले,
जिस पर हो जाए रहमत तेरी।

मन मति दुबोए

तर्ज : बहुत प्यार करते हैं

मन मति डुबोए, गुरु मति तारे,
तू चलना मेरे मन, गुरु के इशारे।

गुरु के वचन पर चलना है मुश्किल,
मगर चलने वालों ने पाई है मंजिल,
यहीं पर मिलेंगे, तुझे ही किनारे।

बड़ी सीधी सादी है बात गुरु की,
हर बात में है करामात गुरु की,
कोई भाग्यशाली, समझे इशारे।

जहां मन की मानी, वहीं धोखा खाया,
सही रास्ता तो गुरु ने बताया
जो माने गुरु की बात, वह बाजी न हारे।

रावण की दुनिया में, कुछ न कमी थी,
सब कुछ था लेकिन गुरु मति नहीं थी,
मेरा सत्गुरु तो जीवन संवारे।

यहां बनता नसीबा सभी का

तर्ज : हम तुम्हें चाहते हैं ऐसे

यहां बनता नसीबा सभी का-2
जो भी आया यहां-2
वो तो होके रहा बस इन्हीं का

सारे जग से निराला ये दर है,
ऐसी चौखट है ये ऽऽऽ
जहां भरता है दामन सभी का
यहां बनता नसीबा...

बड़ी महिमा बड़ा ही है जादू
जो भी इनका हुआ-2
ये भी होके रहा बस उसी का
यहां बनता नसीबा...

यहां रोते हुए जो भी आते,
वो ही ले जाते हैं
इक खजाना यहां से हंसी का
यहां बनता नसीबा...

हमने जीवन में जो कुछ भी पाया
वो है इनका दिया
यही कहना है हम सभी का
यहां बनता नसीबा...

ये आग सी तपती दुनिया

तर्ज : ये चांद सा रोशन चेहरा

ये आग सी तपती दुनिया माया का रंग सुनहरा-2
कोई माने या न माने संताप है इसमें गहरा
शुकराने गाए सतगुरु के जिसने हमें बचाया...

इक तो मानुष तन पाया, दूजा संग सच्चे सतगुरु का-2
गुरु आत्मज्ञान सुनाए, संगम ज्ञान प्रेम भक्ति का-2
सतगुरु है खुद परमेश्वर, खोले है राज रूहानी-2
वो भवसागर तर जाए, जिसने सतगुरु की मानी-2
शुकराने गाए...

दूध में तो मक्खन छिपा है, मेहनत से निकले भाई-2
यूं ही घट-घट में प्रभु हैं, बिन ज्ञान पड़े न दिखाई-2
प्रभु प्रेम दीवानी मीरा तो पी गई विष का प्याला-2
पर देखो लीला प्रभु की, विष को अमृत कर डाला-2
शुकराने गाए...

बिन सूरज है उजियारा बिन चांद चमक इक चांदनी
घट में अनहद शब्द वाजे कैसी अद्भुत ये रागिनी-2
सत्संग है पावन गंगा, जन्मों के मैल को धोती-2
जो इसमें डुबकी लगाए, वो पाए हीरे मोती-2
शुकराने गाए...

ये मोहन है

तर्ज : जमाने में अजी ऐसे भी कुछ इंसान होते हैं
वहीं ले जाते हैं कश्ती जहां तूफान होते हैं

ये मोहन है तभी तो दिल लुभाकर लूट लेते हैं
ये टेढ़ी-टेढ़ी चितवन में फंसाकर लूट लेते हैं

ये अपने चाहने वालों को यूं पामाल करते हैं,
कभी मजबूर करते हैं कभी कंगाल करते हैं
न पूछो अपने भक्तों का ये क्या-क्या हाल करते हैं
और तब कहीं प्यार की दौलत से मालामाल करते हैं
जो खुश हो जाएं तो फिर मुस्कराकर लूट लेते हैं

किसी को श्याम ने मुरली सुनाकर लूट लिया
किसी को श्याम ने जलवा दिखाकर लूट लिया
ये दिल पर जिगर पर निगाहों से वार करते हैं
और एक तीर से लाखों शिकार करते हैं
अदाएं नाज से पागल बनाकर लूट लेते हैं

इनकी बांकी छवि का कोई जवाब नहीं
पर इनकी दीद हर एक को वस्ले आब नहीं
वो घर लुटा जिस घर के ये मेहमां हुए
और उसी को लूट लिया जिस पर ये मेहरबान हुए
निगाहों से निगाहों को मिलाकर लूट लेते हैं

ये दौलत भी वारूं

तर्ज : ये दौलत भी ले लो ये शोहरत भी ले लो

ये दौलत भी वारूं, ये शोहरत भी वारूं
मैं कदमों पे उसके, ये तन मन भी वारूं
मेरा सत्गुरु तो है सबसे निराला
है सबसे निराला है जग से निराला

मेरे सत्गुरु की महिमा निराली
आ जाए जो भी वो जाए न खाली
वो भरपूर होता है वाणी से उसकी
वो ज्ञान का दीपक है मन में जगाता

मेरे गुरु ने सबको है भगवान बनाया
देह से हटा के आत्मा में टिकाया
ना दूजा है कोई हर तरफ मैं ही मैं हूं
आंखों से मेरी ये पर्दा हटाया

मेरे सत्गुरु ने सबको जगाया
भरे थे शिकवों से शुकराना सिखाया
झुका न था ये सर किसी के भी आगे
ये सब झुक गया है चरणों में तुम्हारे
ये दौलत भी वारूं...

ये श्याम तेरी मुरली

तर्ज : दिल लूटने वाले जादूगर अब मैंने तुझे

ये श्याम तेरी मुरली की कसम,
हम तुमसे मोहब्बत कर बैठे
एक दिल के सिवाय कुछ और न था,
वो दिल भी तुम्हारा कर बैठे

तस्वीरों को तेरी जब देखा
मेरे होश उड़ मदहोश हुए-2
जब देखा-2 सांवरी सूरत को
चरणों में झुकाए सर बैठे ये श्याम..

हम तो रंग गए हैं तेरे रंग में
ये रंगने वाले सुन अर्ज मेरी-2
कुछ खोया भी-2 कुछ पाया भी
तेरे प्रेम का सौदा कर बैठे ये श्याम...

पलकों में बिठा लूं तुझको मैं,
तन-मन सब मैं कुर्बान करूं
जब पकड़ा-2 तेरे दामन को
दुनिया से किनारा कर बैठे ये श्याम...

हम तो हो गए दीवाने तेरे,
तू चाहे माने या न माने-2
चाहे बीच डूबा-2 चाहे पार लगा ये
काम तुम्हीं को दे बैठे ये श्याम...

ये जीवन सूखी बगिया थी

तर्ज : बहारों फूल बरसाओ

ये जीवन सूखी बगिया थी,
गुरु माली बन आए हैं-2

सुलगता था जब भी ये मन अज्ञान की अग्नि में
गुरु ने प्रेम वर्षा कर भिगोया अपनी भक्ति में-2
ये जीवन सूखी...

जो हम से भूल हो जाए, तो प्यार से ये समझाए
ज्ञान से हमको यूं उठाए वृत्ति जैसे न गिर जाए
हमारा भाव वो ले ले, हमें यूं मुक्त कर जाए
ये जीवन सूखी...

कोई हलचल जो आ जाए तो बिना बोले समझ जाए
सवाल उठने से पहले ही वो उलझन को सुलझा जाए
उसे जो मन में बसाया, मन माया से न घबराए
ये जीवन सूखी...

दर्द में जब बहें आंसू वो ही दर्द को महसूस करे-2
प्यार का हाथ दिल पर रख सारा दुख वो ही दूर करे-2
गुरु ऐसा कृपालु है बिन मांगे दिल भर जाए-2
ये जीवन सूखी...

ये पल दो पल का जीवन है

तर्ज : मैं पल दो पल का शायर हूं

ये पल दो पल का जीवन है
पल दो पल सारी कहानी है
पल दो पल तन की हस्ती है
ये पल दो पल सारी कहानी है

तुमसे पहले कितने नर तन आए
और आके चले गए
कुछ मोह माया में फंसे रहे
कुछ मुक्ति पाकर चले गए
जो आज तुम्हारे अपने हैं
कल तुमसे जुदा हो जाएंगे
तुम साथ न छोड़ोगे उनका
वो छोड़कर फिर भी जाएंगे

जगती आंखों के सपने को
हमने सच करके जाना है
ईश्वर से मिली अमानत को
हमने अपना क्यों माना है
जब मिलता है उस भगवान से
तो श्रद्धा से झुक जाते हैं
जब लेता है वहीं भगवान तो
चेहरे क्यों मुरझा जाते हैं
ये पल दो पल...

रस्ता रोके पाप लागे

तर्ज: झूठ बोले कौवा काटे

रस्ता रोके पाप लागे मेरे कान्हा से डरियो,
मेरे गिरधर से डरियो मैं कान्हा के संग नाचूंगी
तुम देखते रहियो रास्ता रोके पाप लागे मेरे कान्हा...

तू कान्हा के संग नाचेगी मैं जहर का प्याला भेजूंगा-2
तू जहर का प्याला भेजेगा मैं अमृत कर पी जाऊंगी
रस्ता रोके पाप लागे...

तू कान्हा के संग नाचेगी मैं सांप पिटारा भेजूंगा
तू सांप पिटारा भेजेगा मैं हार गले कर पहनूंगी
रस्ता रोके पाप लागे...

तू कान्हा के संग नाचेगी मैं कपड़े जेवर ले लूंगा
तू कपड़े जेवर ले लेगा मैं भगवे कपड़े पहनूंगी
रस्ता रोके पाप लागे...

तू कान्हा के संग नाचेगी, मैं महलों से निकलवाऊंगा
तू महलों से निकलवाएगा, मैं लखनऊ चली जाऊंगी
तू गुरुद्वार चली जाएगी, मैं पीछे-पीछे आऊंगा,
तू पीछे-पीछे आएगा, तो तू भी रंग-रंग जाएगा,
रस्ता रोके पाप लागे...

रंग लो रंग लो

तर्ज : भूमरो-भूमरो श्याम रंग रंग लो

रंग लो रंग लो श्याम रंग रंग लो
झूम लो झूम लो आज सब झूम लो
छेड़ी गुरु ने प्रेम की ओऽऽऽ धुन

लेकर अवतार प्रेमी श्याम सलोने आए
जन्नत का नूर लेकर सब पे बरसाने आए
चांद सितारे लेकर आए, दिन ये सुहाना झूम लो
लाली मेरे श्याम की बिखरी चारों ओर है
रंग लो...

खिल-2 के लाल हुए मुरझाए थे जो चेहरे
प्रेम की सौगातों से तुमने नवाजा हमें, हो खिल-2
प्रेम का तेरे रंग है सच्चा, बाकी सारे झूठे
इस जीवन में तेरी प्रीत का रंग, कभी ना छूटे
रंग लो...

करुणा निधान है ये इनकी मिसाल नहीं
प्रेम में बंध जाते हैं सबने ये बात कही
हम सब बच्चे हैं इनके, क्यों ना इतराएं प्रेमी
आओ मिल के नाचे गाएं, धूम मचाएं प्रेमियों
रंग लो...

राम सबका है

राम सबका है अपना संगी सखा
बने हम न उसके तो वो क्या करे

पवन पानी से जीवन में रस है भरा
फल फूलों से उसने भर दी है धरा
उससे सब कुछ लिया और कुछ ना दिया
उसकी कृपा न माने तो वो क्या करे

मुंह दिया मुख में शक्ति दी मीठा गला
हाथों में है भर दी अदम्य कला
प्रिय वचन न कहे न किए सतकर्म
गीत उसके न गाए तो वो क्या करे

जाग अब भी तू झट त्याग दे झूठ को
राम नाम भजे तो बेड़ा पार हो
राम है एक ही जो सबमें बसा
दिल किसी का दुखाएं तो वो क्या करें

रोता है मन और तड़पता है मन

तर्ज : आजा सनम मधुर चांदनी में

रोता है मन और तड़पता है मन
मेरे सत्गुरु ले चल मुझे मुक्ति के द्वार
लगता नहीं है दिल यहां-2

श्रद्धा और विश्वास का मेरा ना इम्तहान ले
दिल मेरा यूं मोड़ दे कि हर पल तेरा नाम ले
गुरु की सच्ची नजर कह रही है ध्यान कर
जिंदगी है इक सफर किसको है कल की खबर
बहकता है मन और तड़पता है मन...
मेरे सत्गुरु ले चल मुझे मुक्ति के द्वार

दिल ये चाहे आज से तेरी वाणी में खो जाऊं मैं,
दादा तेरे वचनों को तन में पी जाऊं मैं
प्यास ऐसी दे मुझे तेरी वाणी से बुझे
ऐसा गुरु मिले तेरे सिवा सबको हम तजे
ऐसी लागी है मेरे मन की उमंग मेरे सत्गुरु ले चल...

जीवन मेरा आज तक माया की तस्वीर था
मिलना तुझसे सत्गुरु मेरी भी तकदीर था
अब तो वो उपकार कर मेरा बेड़ा पार कर
भूला हूं मैं अपना घर आया हूं मैं तेरे दर-2
मंजिल बता दे मोहे सांवरो मिला दे... मेरे सत्गुरु...

राधा के मन में

राधा के मन में बस गए श्याम बिहारी
श्याम रंग में रंग गई राधा
भूली सुध बुध सारी...

श्याम नाम की चादर ओढ़ी
श्याम नाम की चूड़ियां
अंग-अंग में राम समाए
मिट गई सारी दूरिया
कानों में कुंडल गल वैजंती
माला लागे प्यारी-श्याम रंग...

बैठे कदम्ब की डाल कन्हैया
मुरली मधुर बजावे
श्याम सवेरे मुरली के संग,
राधा राधा गावे
इस मुरली की तान पर जाए
ये दुनिया बलिहारी श्याम रंग में रंग...

अधर सुधा रस मुरली साजे
कान्हा रास रचावे
विश्व रचैया राधा रचना
प्रेम सुधा बरसावे
प्रेम मगन हो सब ही बोलो
जय हो बाके बिहारी राधा के मन में...

लगी वालियां नूं नीद नयो आंदी

लगी वालियां नूं नींद नयो आंदी
तेरी किवे नी अंख लग गई-2

तू सुत्ता पया साईं तेरा जागदा
होवे मेल किवे साईं जे तू सो गया
खोल अंखियां-3 तू मन दिया सजनी
तेरी किवे नी...

भावे सत्‌गुरु अपने नू पुछ लै
अंदर वृत्ति जगा के तू पुछ लै
लगी इश्क़ वालियां, रोज नी निमाणी
तेरी किवे नी...

राती सोके ते दिन खा-खा के
पछतावेगा तू जिंदगी गंवा के
फिर मौका ये हथ नइयों आवां
तेरी किवे नी...

होश वाली तेरी-तेरी सुरति तां जग गई
गीता श्याम वाली सुरति तां सध गई
आपे प्रीता लाइयां ने, पावेंगी निमाणी
तेरी किवे नी...

ले लो राम नाम अधिकारी

ले लो राम नाम अधिकारी
रंग लो तन मन चुनरिया सारी रे
ले लो...

काहे ढूंढ़े मथुरा काशी काहे तीरथ प्रयागा
काहे अंतर नजरिया न डाली रे,
ले लो...

दोनों में कोई भेद नहीं है
जो तू है सो ही तो वही है
मन से पर्दा हटा लो भारी रे...
ले लो...

गुरु चरनन में शीश झुका लो
आवागमन का चक्र मिटा लो
छूटे दुख की बदरिया कारी रे,
ले लो...

लुट रहा लुट रहा

लुट रहा लुट रहा लुट रहा रे
प्रेम का खजाना लुट रहा रे

लूट सके तो लूट ले बंदे
काहे देरी करता है
ऐसा मौका फिर ना मिलेगा
सबकी झोली भरता है
गुरु की शरण में आकर के
खोया खजाना मिल गया रे

लूट सके तो लूट ले बंदे
काहे देरी करता है
ऐसा मौका फिर ना मिलेगा
सबकी झोली भरता है
गुरु की शरण में आकर के
खोया खजाना मिल गया रे

हाथों हाथ मिलेगा परचा
ये दरबार निराला है
प्रत्यक्ष फल ये देने वाला
ये तो ज्ञान निराला है
जिसने खुद को जान लिया
उसकी किस्मत का ताला खुल गया रे

जीवन मुक्ति हमको मिली है
मौत को गुरु ने मारा है
भटके हुओं को राह दिखाता
डूबतों को इसने तारा है
जो कोई इसकी शरण में आए
चौरासी से बचता है

सूरत में तेरी ही तो

तर्ज : तुझको न देखूं तो जी घबराता है

सूरत में तेरी ही तो प्रभु को पाया है
तेरा ही चेहरा तो हर दिल में समाया है
बिछुड़े थे जन्मों से अब ही तो पाया है
अब तो मेरे साथ हर पल तेरा ही साया है

दुनिया में तेरे बिन हम थे अकेले
तुम संग गुरुवर खुशियों के मेले
तुझसे है शक्ति तुझसे है भक्ति
वचनों से तेरे मिलती है मुक्ति
ये तेरा ज्ञान ही बस मुझको लुभाता है
तेरा ही चेहरा...

मैं तेरी राधा तू मेरा श्याम है
तेरे बिना ये जीवन वीरान है
माया को छोड़कर रिश्ते सब तोड़कर
जोड़ी है तुझसे प्रीत की डोर ये
ओ गिरधर बस मुझको तू ही तो प्यारा है
शुकराने हैं तूने ही तो जीवन संवारा है
सूरत में तेरी...

तुझको ना देखूं तो जी घबराता है
देख के तुझको दिल को मेरे चैन आता है
ये कैसा रिश्ता है कैसा नाता है
देख के तुझको दिल को...

सत्गुरु आए हैं

तर्ज : खुश रहो हर खुशी है तुम्हारी

सत्गुरु आए हैं जग में हमारे लिए
ज्ञान वर्षा हुई है हमारे लिए

देखने में गुरु अपना साकार है
पर ये सच है यही वो निराकार है
डूबतों को उबारे जो भव में गिरे
और कहते भला किसको अवतार हैं

सच के पथ से तो रहते थे अंजान हम
मिथ्या बातों से होते परेशान हम
यूं ही चलते तो बन जाते शैतान हम
अब ये जाना प्रभु की है संतान हम

तेरा शुकराना मैं किस जुबां से करूं
ऐसा वर दो कि वचनों में तेरे रहूं
और कर्मों के बंधन न बांधे मुझे
सूखा पत्ता मैं बनके पवन में उडूं

प्रभु का समझो इशारा तो जाओ सम्भल
अब न भूले हृदय से हरि एक पल
साधु संगत है मिलती बड़े भाग्य से
ज्ञान अमृत मिला कर लो जीवन सफल
सत्गुरु आए हैं जग में...

सुख दुख धूप और छांव रे

तर्ज : बूझ मेरा क्या नाम रे

सुख दुख धूप और छांव रे खेले पल-पल दांव रे
जाना है जो पार दोनों से चढ़ जा गुरु की नाव रे

आनंद है वो नगरी सुख दुख से जो है पार
सत्गुरु की शरण में आए हो जाता है उद्धार
सुख नहीं दुख नहीं आनंद बेशुमार रे...

गुरु के इक-इक वचनों मेंऽऽऽ तीरो जैसी धार
जीवन ही बदलकर रख दे हो जाए दिल के पार
आए जो पाए जो शरण में इक बार रेऽऽऽ

आंसू और शिकायत हो जाते दोनों दूर
सुख दुख दोनों हैं छूटे आनंद छाया भरपूर
आओ रे गाओ रे शुकरानों के गीत रे
सुख दुख धूप और छांव रे...

सारे जग को तारने दादा

तर्ज: दिल ही दिल में ले लिया दिल मेहरबानी...

सारे जग को तारने दादा जहां में आ गए
उठ भी जाओ प्रेमियों तुमको जगाने आ गए

कुल जहां के पीड़ितों घबराओ मत कर लो यकीन
तारेगा वो आसमां तारेगा पूरी जमीं तारेगा पाताल
खुद वो वंशी बजैया आ गए सारे जग को तारने...

दीन दुखियों मुस्कराओ खुशियों के दिन आ गए
मौज मनाओ नाचो गाओ आ गए वो आ गए
रोना धोना छोड़ दो अब तुमको हंसाने आ गए
सारे जग को तारने...

शीश दे के ईश पाओ फीस बस इतनी सी है
जिनको मरना आ गया बात बस इतनी सी है
जो है बुजदिल भाग जाओ तलवार लेके आ गए
सारे जग को तारने...

कैसी है हैरानगी ब्रह्म वो तो हो गए
जो प्रभु को ढूंढ़ते थे खुद प्रभु वो हो गए
करने सबको राममय मेरे मसीहा आ गए
सारे जग को तारने...

सांची कहूं तोरे आवन से सत्गुरु

तर्ज : सांची कहूं तोरे आवन से हमरे

सांची कहूं तोरे आवन से सत्गुरु
मनुवा में छाई बहार गुरु जी

मन में था मोहमाया का डेरा
जब से हुआ तेरा सत्गुरु से फेरा
दुनिया बदल गई हालत संवर गई
जीवन हुआ खुशहाल गुरु जी
मनुवा में छाई बहार...

सारी उमरिया गफलत में बीती
अब तो लगा ले प्राणी सत्गुरु से प्रीति
सत्संग की गंगा है गोता लगा ले
नैया लगा देंगे पार गुरु जी

मोहमाया गले फंदा है डाले
सत्गुरु हमें अब तू ही सम्भाले
ले लो शरण गुरु आए हैं दर पे
मुक्ति विधाता हमार गुरु जी

सबसे सुंदर सबसे प्यारा

तर्ज : स्वर्ग से सुंदर सपनों से प्यारा

सबसे सुंदर सबसे प्यारा है तेरा दरबार
बना रहे यूं हमसे प्रीतम सदा-सदा तेरा प्यार
तेरा दरबार न छूटे, प्यार की तार न टूटे...

तुझसे नेहा लगा के पाए सुख हम सारे
पिछले जन्म कर्मों के जागे भाग्य हमारे
कहां मिलेगा ऐसा सच्चा बिन स्वार्थ का प्यार
तेरा दरबार न...

तुम हो दीन दयालु रहमत तेरी क्या कहना
तुमने सिखाया जीना सच की राह पे चलना
बिना तुम्हारे सपने में भी जीना है बेकार
तेरा दरबार न...

तेरे श्री चरणों में बहती प्रेम की धारा
इनमें हैं सब तीर्थ, यह तीर्थ राज हमारा
यहां झुकाकर सिर को हमने पाया शांति भंडार
तेरा दरबार न...

प्रेमी है हम तेरे सब कुछ हम तुम पर वारे
तुम हो संग सदाई तुम हो भगवान हमारे
तेरा दरबार न...

यह जीवन है नाम से तेरे कर दे जीवन उद्धार
तेरा दरबार मिला है प्यार की तार जुड़ी है...

सत्गुरु के हैं जो

सत्गुरु के हैं जो रे उन्हें दर्द न लागा कोई
बाहर से खामोश रहे पर भीतर अमृत बरसे

सह न सके जो गुरु की जुदाई
उसके हृदय की यही है कहानी रे
हरदम गुरु को मन में बसाए
अंसुवन नीर बहाए रे, उन्हें दर्द...

चुपके-चुपके प्यार वो करता
देखता गुरु को हर घट में वो रे
उसने मन को ये ही समझाया
दूजा ना होय कोई रे

गुरु को जिसने मन में बसाया
उसका बेड़ा पार हो जाए रे
गुरु के आगे चले ना किसी की
काल की क्या है मजाल रे...

तन मन धन जो सौंपे गुरु को
गुरु भी उसका भार उठाए रे
गुरु ने उसका जीवन लिखा है
सोने की कलम डुबोए रे...

सत्गुरु खेल रहे हैं होली

सतगुरु खेल रहे हैं होली,
प्यारे हरि भक्तन के संग

दुनिया खेल रही है होली
कर-कर के हुड़दंग
गुरु हमारे खेल रहे हैं
कर-कर के सतसंग सत्गुरु खेल रहे...

कर्म की कर में ले पिचकारी
मारे विवेक का रंग
जिसके दिल पर लगे निशाना
रह जाए वो दंग सत्गुरु खेल रहे...

ज्ञान गुलाल मले मुख ऊपर
प्रेम का बरसे रंग
भाव-भक्ति का रंग लगाकर
गावत-ताल मृदंग सत्गुरु खेल रहे....

सतगुरु से सत्संगी खेलें
कृष्ण राधिका संग
सीता संग रघुवर जी खेलें
गुरु हमारे संग सत्गुरु खेल रहे...

सत्गुरु जी मेरे प्यारे

तर्ज : दुनिया बनाने वाले क्या तेरे मन में समाई

सत्गुरु जी मेरे प्यारे, इक तेरे ही सहारे
सुन ले ओ प्रेमी प्यारे-2 तूने काहे को जीवन गवाई

चौरासी के बाद मिला था ये चोला
कीमत न जानी थी ये बड़ा अनमोला
विषयों में जाके तूने वक्त बिताया
अंत समय कुछ भी हाथ न आया
अब क्या गुरु को पुकारे
जब था मौका तू सोया भाई...

गुरु ने कितने प्यार से समझाया
तेरी समझ में पर क्यों न आया
क्या-क्या इशारे सत्गुरु ने दिए थे
तेरी नजरों में तो पर्दे पड़े थे
अब रोने से क्या फायदा
चिड़िया चुग गई खेती तूने काहे को...

ऐसा सत्गुरु हमें फिर न मिलेगा
ऐसी करूणा का दान न मिलेगा
गुरु चरणों में ही तो मुक्ति मिली है
जीने की हमें सच्ची युक्ति मिली है
वाह-वाह सत्गुरु प्यारे-2 तेरे बहुत शुक्राने
सुंदर जीवन बनाई तूने सुंदर जीवन बनाई
सुन ले ओ प्रेमी प्यारे-2 गुरु की जिसने है मानी
उसने सुंदर जीवन बनाई।

सत्गुरु की शरण आना

तर्ज : जब दीप जले आना, जब शाम ढले

सत्गुरु की शरण आना, जीवन को सफल करना
चाहो गर चौरासी से बचना तो सत्संग से प्रीत करना

जाने कितने युगों से बिछड़े थे हम,
कैसे मिलन हुआ नहीं जाने हम
इस प्रेम की डोरी से अब तो
प्यारो सब बंधे रहना
सत्गुरु की शरण आना...

नी रे गा रे गा, मा गा रे स स नी,
प म प, रे गा स नी स ग, प म प

नित अमृत यहां बरसता है
जिसे पी के अमर हम बनते हैं
इन प्रेम प्यालों को सब प्यारों
नित-नित पीया करना
सत्गुरु की शरण आना...

गुरु ज्ञान का दीप जला कर के
नित प्रेम का तेल देते रहना
शमा के दीवानों-परवानों
श्रद्धा-विश्वास बनाए रखना
सत्गुरु की शरण आना...

सत्संग की लगन तन मन अर्पण

तर्ज : चंदन सा बदन चंचल चितवन

सत्संग की लगन तन मन अर्पण
तुम रोज ही करना शुकराना
कभी भूल न जाना जीवन में
फूलों की तरह तुम मुस्काना

अनमोल मिला जीवन तुमको
कुछ काम मिला है करने को
निष्काम से सेवा करता जा
और याद करेगी दुनिया तुमको
कितना भी अगर दुख मिल जाए
पर इन दुखों से न तुम घबराना
सत्संग की लगन...

तन भी सुंदर मन भी सुंदर
मालिक ममता की मूरत है
तन से मन से तू भक्ति कर
मिल जाएगी तुमको शक्ति है
पहले भी बहुत तू भटका है
अब और न मन को भटकाना
सत्संग की लगन...

सत्गुरु के अमृत वचनों को
तुम वैसे ही जीवन में लाना
बन जाए सकल तेरा जीवन
सत्गुरु की शरण में आ जाना
तेरी सत्गुरु नैया पार करे
भव सागर से तुम तर जाना सत्संग की लगन...

सदा सुख ही बरसाती

तर्ज : हुए हैं तुमपे आशिक हम भला मानो बुरा

सदा सुख ही बरसाती है
प्रभु भक्ति गुरु भक्ति
दुखों से हमें बचाती है
प्रभु भक्ति गुरु भक्ति

गुरु भक्ति में जो जुड़ा ये मन रहे
प्रभु के रंग में रंगा ये जीवन रहे
तो फिर जीवन बिना कोई उलझन नहीं
होऽऽ मान लो तो जिंदगी सुख से भर जाती है
सदा सुख...

वो महलों में रहे या कुटिया में रहे
मैं हूं आनंद में वो सबसे ये कहे
ये गंगा ज्ञान की जिस दिल में बहे
होऽऽ मान लो तो जिंदगी सुख से भर जाती है
सदा सुख...

ना बंधन वक्त का ना सुबहो शाम का
नाम अल्लाह का लो या ईसा राम का
जो गुरु की मान ले वो बंदा काम का-2
हो मान लो तो जिंदगी सुख...
सदा सुख ही बरसाती है...

सुनो-सुनो-सुनो

सुनो-सुनो-सुनो-सुनो सुनो-सुनो-सुनो-सुनो
दिल मेरा करे मैं उड़-उड़ जावां
दर्शन तेरा मैं नित-नित पांवा
दिलवर-दिलवर मेरा सत्गुरु प्यारा दिलवर
जीवन सफल हुआ है ऐसे सत्गुरु से मिलकर

सूरज के जैसा होयऽऽ चंदा के जैसा
सुख को वो बांटे दुख ले जाता है
इस दिल की गली में जब शाम ढले तो
सत्गुरु मेरा दुख ले जाता है
कर-कर के याद फिर दिल ये कहता है
तुझे देख के निकला होगा चांद...

रहमत-रहमत-रहमत तू रहमत ऐसी कीती
दिल विच जगह बनाई दुनिया दी ऐसी तैसी
सूरज के जैसा होयऽऽ चंदा के जैसा
सुख को वो बांटे दुख ले जाता है
इस दिल की गली में जब शाम ढले तो
सत्गुरु मेरा दुख ले जाता है कर कर के याद...

मस्ती-मस्ती-मस्ती तेरे नाम दी चढ़ गई मस्ती
तेरे चरणों की दीवानी, हम दीवानों की बस्ती
सूरज के जैसा होयऽऽ चंदा के जैसा
सुख को वो बांटे दुख ले जाता है
इस दिल की गली में जब शाम ढले तो
सत्गुरु मेरा दुख ले जाता है
कर-कर के याद तुझे देख के निकला...

सत्यनाम का सिमरन कर ले

सत्यनाम का सिमरन कर ले
कल जाने क्या होय
जाग-जाग मन निज आतम में
काहे विरथा सोए

जेहि कारण तू जग में आया
सो नहीं तूने कर्म कमाया
मन मैला का मैला तेरा
काया मलमल धोय सत्यनाम का...

दो दिन का रैन बसेरा
कौन है तेरा कौन है मेरा
हुआ सवेरा चले मुसाफिर
अब क्या नयन भिगोए सत्यनाम का...

गुरु का शबद बसा ले मन में
चौरासी से छूटे क्षण में
ये तन बार-बार नहीं मिलता
शुभ अवसर क्यों खोए सत्यनाम का...

ये दुनिया है एक तमाशा
कर नहीं बंदे इसकी आशा
कहे कबीरा सुनो भई साधो
हरि भावे सो होय...सत्यनाम का...

सत्गुरु के सत्संग में

तर्ज : हर दिल जो प्यार करेगा वो गाना गाएगा

सत्गुरु के सत्संग में जो नित नियम से आएगा
आनंद का सच्चा सुख भी वो ही पाएगा

ज्ञान धरम की बातें तो हम रोज ही करते रहते हैं
पर ना उन पर इक पल भी हम अंदर सोचा करते हैं
सत्गुरु के वचनों को जो जीवन में लगाएगा
आनंद का...

रोज ही आकर सत्संग में हम अपने दिल की बात करें
सत्गुरु से हम कुछ ना छिपाएं अपने मन को साफ करें
सत्गुरु के चरणों में नित शीश झुकाएंगे
आनंद का...

पुरुषार्थ हो कर्म हमारा और ना कोई करम करे
सत्गुरु से हम प्रेम बढ़ाएं और ना कोई धरम करें,
सत्गुरु के प्रेम में जो भी बढ़ता ही जाएगा
आनंद का...

सत्गुरु तुम्हारी मेहरबानियां हैं

तर्ज : मोहब्बत की झूठी कहानी पे रोए

सत्गुरु तुम्हारी मेहरबानियां हैं रहमत तुम्हारी
हम पर कदरदानियां हैं कदरदानियां हैं

तुम्हारी तपस्या का फल पा रहे हैं
बड़ी मौज में हम तो जिए जा रहे हैं
खुशी ही खुशी अब ना कोई गिला है गिला है
सतगुरु तुम्हारी...

प्रेम ज्ञान ने तुम्हारे जीना सिखाया
जीवन की राहों में दीपक दिखाया
शुक्रिया तुम्हारा जो तुमने किया है
सतगुरु तुम्हारी...

शरण में तुम्हारी सदा ही रहें हम
तुम्हारी ही राहों में समर्पित रहें हम
सलामत रहे ये जो तुमने दिया है
सत्गुरु तुम्हारी...

साकी तेरे मैखाने में

साकी तेरे मैखाने में हर रंग की पिलाई जाती है
मस्ती का नशा सागर से नहीं आंखों से पिलाई जाती है

लाखों मस्त दीवाने बैठे हैं
हैं सबको तमन्ना पीने की
यहां काम नहीं नापने तौलने का
बिना तौल पिलाई जाती है

मौज लेते हैं मस्त मैखाने में
कोई नाचता है कोई गाता है
हम जैसे दीवाने लोगों के
यहां होश भुलाए जाते हैं

उसका नशा कैसे कम हो जाए
जो आ गया इस मैखाने में
इस जाम की जिसको तलब लगे
उनकी हस्ती मिटाई जाती है

वो सजदा क्या जो सर धर के उठे
फिर पूरी नमाज ही करके उठे
उठे गर्दन जो बस मर के उठे
जिंदा दफनाई जाती है

ऐ प्रेमी तू बस दीवाना बन
दीवाना बन परवाना बन
जहां सर उठा इन कदमों से
गर्दन ही उड़ाई जाती है।

सतगुरु तेरे वचनों में

सत्गुरु तेरे वचनों में दिल खो गया
तेरे दर्शन पाकर मैं धन्य हो गया
दिल खो गया...

सत्गुरु तेरी नजर ने ऐसा किया है असर
राग द्वेष सब छूटे, सारे बंधन टूट गए
हाय क्या कहें ये क्या हो गया
हाय पल में लगे ये दुनिया नई...
दिल खो गया...

गुरु की वाणी से प्राणी तू अपने को जान ले
तेरी क्या औकात है, तू खुद को पहचान ले
साथ तेरे कुछ न जाएगा सब कुछ यहीं रह जाएगा
दिल खो गया...

ज्ञान का दीप जलाकर सारे भरम को मिटाकर
गुरु शरण में आ तू सारे अहम भुलाकर
जीवन तेरा संवर जाएगा
मुक्ति चौरासी से तू पाएगा
दिल खो गया...

सत्गुरु भगवान को प्यारे गीता

सत्गुरु भगवान को, प्यारे गीता श्याम को
वंदना हमारी है बार-बार वंदना हमारी है
हजार बार वंदना हमारी है...

सत्गुरु मेरा बड़ा निराला आला मेरे प्यार का
माया नाल बनाया नक्शा तू सारे संसार दां-2
पत्ते-पत्ते डाल-डाल तू ही बसे प्यारे लाल
तेरा नाम उच्चारे है बार-बार तेरा नाम उचारे है
सत्गुरु भगवान को...

वेद पुराणों ने यश गाया नेति-नेति बोल के
संत महात्मा ऋषि मुनि सत्गुरु मिलते डोल के
हो-हो के दयाल लाल, सारे दुख दिए टाल
शरण तिहारी है बार-बार शरण तिहारी है...

गगन मंडल का थाल सजाया,
सूरज चांद जगाए ज्योति
नाम तेरे की चुन-चुन कलियां
तारों को बनाया मोती-2
मोती लगे डाल-डाल प्रेमी है प्रेम नाल-2
आरती उतारी है बार-बार आरती उतारी है।
सत्गुरु भगवान को...

सच की पतवार है

तर्ज : जिया बेकरार है

सच की पतवार है गुरु खेवणहार है
जो भी आए इस नैया होता बेड़ा पार है

ओ राम नाम की नैया बनाई
सत्गुरु बने खिवैया-2 हो...
मनुष्य रूप में आए हैं
जो मेरे कृष्ण कन्हैया-2 सच की...

ओ नैनों में करूणा का सागर
मुख पे मीठी बोली-2 हो...
प्यारा-प्यारा मुखड़ा उनका
सूरत भोली-भोली-2 सच की...

ओ...होंठों से है ब्रह्मज्ञान निकले
मन में प्रेम का सागर-2 हो...
श्रद्धा से जो भी आए
भर जाए खाली गागर-2 सच की...

ओ शुकराने निशदिन मैं गाऊं
जीवन तुमने संवारी-2 हो...
सत्गुरु तुम पर कर दूं मैं
तन मन धन बलिहारी-2 सच की...

सारा दिन हो अभ्यास अगर

तर्ज : तेरा मेरा प्यार अमर

सारा दिन हो अभ्यास अगर
फिर क्यों होगा माया का डर
चंचल मनवा मत तू घबरा
थोड़ा सा तू धीरज तो धर-2

गुरु ने जो ज्ञान दिया, उसको ही है मानना
देह नहीं, तू है आत्मा ये ही है तुझको जानना
निश्चय को अपने दृढ़ तू कर
फिर क्यों होगा माया का डर सारा दिन हो...

है यही लक्ष्य मेरा, बस अपने को जानना
अपनी कृपा आप करो ये ही है गुरु का कहना
वचनों को अमल करते रहो
फिर क्यों होगा माया का डर सारा दिन हो...

अपनी मैं को मिटाकर, आत्मा में जोड़ना
युक्ति और समझ से मन को बस है मोड़ना
मन को तू ले चल सत्य की ओर
सौंप दे उसको मन की डोर
सारा दिन हो अभ्यास अगर...

सत्गुरु के आने से जीवन में

सत्गुरु के आने से जीवन में भोर हो गई
पुलकित हो गए प्राण आत्मा आनंद विभोर हो गई

जबसे गुरु रहबर मिला, मिल गए मुझे दो जहां,
अब नहीं कोई कामना, जिंदगी बनी साधना,
तन मन जीवन कह उठा, गुरु मिलन से भोर हो गई

ज्ञान गुरुमुख से सुना, जीवन एक उपवन बना,
प्रेममयी फूलों से अब, महका ये जीवन मेरा,
गुलशन के महक जाने से जीवन में भोर हो गई...

जिंदगी भर रहे जुड़ी, गुरु से प्रीत की यह कड़ी,
पल-पल बीते ज्ञान में, रहें जीवन निष्काम में,
जब से तेरे हुए हैं हम, जीवन में भोर हो गई।

सत्गुरु कमाल हो

तर्ज : चौदहवीं का चांद हो या आफताब हो

सत्गुरु कमाल हो, दादा दयाल हो,
नूरों के नूर शहनशाह, तुम बेमिसाल हो॥

जीवन बदल दे पल में, जिस पर पड़ी नजर,
इंसान बने हैं भगवान, तेरी हो मेहर नजर,
चरणों में आए जो भी, बंदा निहाल हो
तुम बेमिसाल हो...

रहमत की तेरी चर्चा, हर कूचे हर गली,
पीरों का तू है पीर, वलियों का तू वली,
तेरे साथ मिलके लाल जी, हर रूह लाल हो
तुम बेमिसाल हो...

देखे कोई चलन तेरा, कोई ठाठ देखता,
ब्रह्मज्ञान सुने जो एक बार, वह है बाट देखता,
आई समझ न जग को, तुम वह सवाल हो
तुम बेमिसाल हो...

देखा तुझी को जगत में, देखा ब्रह्माण्ड में,
पाया तुझी को सृष्टि के, हर खंड-खंड में
हर शह में तेरा जलवा, तुम लाजवाब हो
तुम बेमिसाल हो...

सत्गुरु तुम तो हो मेरे कुम्हार

सत्गुरु तुम तो हो मेरे कुम्हार,
मैं माटी इसी धरती की, धरती कहे पुकार।

वो माटी भी क्या माटी थी, रूंधती थी जग माही,
पांव तले आती थी सबके, तूने लिया उठा,
हाथ उठाकर कीन्ही सफाई और किया तैयार।
धरती कहे पुकार...

भाव का जल उसमें डाला, माटी हुई निहाल,
चाक चढ़ाकर रूप उबारा, कितनी करी सम्भाल,
सहलाकर तू जब अंतर को, चोट लगे सतकार
धरती कहे पुकार...

ज्ञान की अग्नि इस माटी को, दिन-दिन रंग चढ़ाए
प्रेम के उपलों से अनुभव को और दिया है बढ़ाए,
तपकर, बनकर लगी ये बोलन तू इसका करतार
धरती कहे पुकार...

ये माटी बन गई अब तो फूलों का गुलदान,
महकाएगी जीवन सबका, देकर प्रेम का दान,
धन्य है माटी, धन्य है माली धन्य है यह अवतार
धरती कहे पुकार...

सत्गुरु पाया ते हो ते निहाल

सत्गुरु पाया ते हो गईआं निहाल नी संइयों
सीस नवाया ते सत्गुरु मेरे नाल नी संइयों।

नी मैं लबदी सी, जंगला पहाड़ां,
नी मैं लबदी सी, मंदिरा मसीतां,
अंदर बैठा ऐ आया न ख्याल नी संइयों।
सत्गुरु पाया ते...

जदो पुछया ते कुछ वी न बोलया,
जदों बोलया ते भेद सारा खोलया,
गलां करदा ऐ हंस-हंस मेरे नाल नी संइयों।
सत्गुरु पाया ते...

ओखे वेले मैं जदो नी पुकारया,
बांह पकड़ के पार उतारया,
ओ ते रहदां ऐ हरदम मेरे नाल नी संइयों।
सत्गुरु पाया ते...

संता दा संग

संता दा संग बड़े भागां नाल मिलदा,
पांदे ने कोई किस्मत वाले
संता दे चरणां च मौज बहारां,
लेंदे ने कोई भागां वाले।

संता दे संग विच बड़ी वडियाई,
संता दी महिमा ऋषियां मुनियां ने गाई,
संता दे संग नाल तर गईयां संगता, तर जांदे ने।
संता दा संग...

कई जनमां दा पुण्य जो होवे,
तां संता दा दर्शन होवे,
दर्शन मिलदे ने दिल खिल जांदे
खिलदे ने कोई भागां वाले।
संता दा संग...

जो गुरुआं दी शरणी आवै,
लख चौरासी नी कर जावै,
भटके होयां नूं राह दिखावै,
चलदे ने कोई भागां वाले।
संता दा संग...

सत्गुरु तेरे चरणों की

सत्गुरु तेरे चरणों की गर धूल जो मिल जाए,
सच कहती हूं मेरा, जीवन ही संवर जाए

यह मन बड़ा चंचल है, मैं कैसे भजन कर लूं,
जितना इसे समझाऊं, उतना ही मचल जाए।
सत्गुरु तेरे चरणों की...

कहते हैं तेरी रहमत, दिन रात बरसती है,
इक बूंद जो मिल जाए, जीवन ही बदल जाए।
सत्गुरु तेरे चरणों की...

नजरों से गिराना ना, चाहे लाख सजा देना,
नजरों से जो गिर जाए, मुश्किल है सम्भल जाना।
सत्गुरु तेरे चरणों की...

बस एक तमन्ना है, यह मेरे जीवन की,
तू सामने हो मेरे, मेरा दम ही निकल जाए॥
सत्गुरु तेरे चरणों की...

श्याम मेरा मैं श्याम की होई रे

श्याम मेरा मैं श्याम की होई रे
अब क्या करेगा कोई रे
मैंने लोक लाज सब खोई रे
अब क्या करेगा कोई रे...

श्याम तुझे मैं मिलने के कारण
रात भर न सोई रे
अब क्या करेगा...

गोकुल में ढूंढ़ा तुझे मथुरा में ढूंढ़ा
ना मिला निर्मोही रे
अब क्या करेगा...

सखियां कहें ये तो भई रे बावरी
श्याम के रंग में खोई रे
अब क्या करेगा...

माधव-माधव रटते-रटते
आप ही माधव होई रे
अब क्या करेगा...

श्याम संग खेले होली

तर्ज : पिया संग खेलूं होली फागुन आयो रे

श्याम संग खेले होली, फागुन आयो रे
भीज जाए चूनर मोरी, फागुन आयो रे
धिनक धिन-4, तिनक धिन-ता-ता-ता

रंग दे तूं चूनर अबकी हमार
फिर कोई रंग न चढ़े दूजी-दूजी बार
भीग जाए तन, भीग जाए मन
ऐसी होली खेलो श्यामा, रहे ना विकार
आधी होली भाए ना, कृष्ण मुरार
धिनक धिन...

लिए रंग लाल, विहसे गोपाल
रूकमणि लज्जाए, राधा रंगवाए गाल
काहे खींचे हाथ, काहे छोड़े साथ
ऐसी होली फिर ना आए, जैसी आई आज
काहे करे जोरा-जोरी, काहे करे दिल की चोरी
फागुन आयो रे....

शुकराना मेरे सतगुरु

तर्ज : अफसाना लिख रही हूं दिले बेकरार का

शुकराना मेरे सतगुरु अपना बना लिया
वाणी ने मुझको आपकी झुकना सिखा दिया

कृपा की छाया में बैठा लिया मुझे
दुखों की आंधियों से मुझको बचा लिया
वाणी ने मुझको...

ओ मिल गया है मुझको दुनिया को क्या खबर
अंदर साईं हैं अपना मुझको बता दिया
वाणी ने मुझको...

सब ठीक है सब ठीक है ये मंत्र है दिया
उसकी रजा में राजी, रहना सिखा दिया
वाणी ने मुझको...

शुक्रिया-शुक्रिया

शुक्रिया-3 मेरे दादा तेरा शुक्रिया
शुक्रिया हमको दी तूने मंजिल
देखो कैसी सजी है ये महफिल
शुक्रिया-3

मेरे तन में जो दम है तुम्हीं से
मेरी श्वांसें हैं श्वासें तुम्हीं से
शुक्रिया-3

ये जो सर है झुका हमारा
दादा नजराना है ये तुम्हारा
शुक्रिया-3

शुक्रिया हमको दादा मिला है
जिसके कदम इस धरती पे आए
शुक्रिया-3...

तेरे द्वारे पे जो भी है आया
मुंह मांगा है सब कुछ पाया
शुक्रिया-3...

श्रद्धा के सुमन शत-शत वंदन

तर्ज : चंदन सा बदन चंचल चितवन

श्रद्धा के सुमन शत-शत वंदन हे परम कृपालु गुरुवरा
जब-जब हम तुमको याद करें तुम दौड़े आना गुरुवरा

राहों में तेरी मेरे सत्गुरु पलकों की सेवा बिछा दूं मैं
फूलों की अब क्या जरूरत है जी चाहे जान लुटा दूं मैं
लगता है मुझको कुछ ऐसा, दिल हो गया मेरा आशना
श्रद्धा के सुमन...

मन का ये सुमन कर दूं अर्पण, जो तेरी इक अमानत है
ओ प्रियतम मेरे ओ दिलवर मुझे हर पल तेरी जरूरत है
खुश क्यों ना हूं मैं अब तो सनम जब तुझसा पाया मेहरबान
श्रद्धा के सुमन...

सम्भव नहीं अब तो ऐ सत्गुरु मैं याद भुला पाऊं तेरी
बढ़ती रहे प्रीत मेरी सत्गुरु नाथ दया पाऊं तेरी
हर हाल में तुम मेरे साथ रहो है नाम तेरा मेरा आसरा
श्रद्धा के सुमन...

होलियां में उड़े रे गुलाल

होलियां में उड़े रे गुलाल, बधाई सारे भगतां ने
नाचे रे नाचे नंदलाल, बधाई सारे भगतां ने

थारी या मंगेजण नखरे वाली
शहजादों रे नवाब, बधाई सारे...

थारी या मंगेजण साड़ी वाली
सूट वालों रे नवाब, बधाई सारे...

थारी या मंगेजण चूड़ले वाली
तू घड़ियां वालों रे नवाब, बधाई सारे...

थारी या मंगेजण सोने वाली
डाइमंड वालों रे नवाब, बधाई सारे...

थारी या मंगेजण नथनी वाली
मूंछा वालों रे नवाब, बधाई सारे...

थारी गोपी रंगों वाली
प्रेम वालों रे नवाब, बधाई सारे...

थारी गोपी मटकी वाली,
लखनऊ वालों रे नवाब, बधाई सारे...

हे सत्संत के तले

तर्ज : हे नीले गगन के तले

हे सत्संगत के तले, गुरु का प्यार पले
सांझ सवेरे दर्शन को तेरे, आते हैं दौड़ चले

आत्मज्ञानी गुरु को संग ले मुक्ति के द्वार चले
हे सत्संगत के तले

ज्ञान के मोती ध्यान के हीरे लूट जो लूट सके
हे सत्संगत के तले

जीवन में इतना आनंद भर दे कोई कमी न खले
हे सत्संगत के तले

मन मेरा दुश्मन दोस्त बुनकर मुझको रोज छले
हे सत्संगत के तले...

आग ऐसी गुरु ने लगाई सारे ही कर्म जले
हे सत्संगत के तले...

मन मंदिर में ज्ञान की ज्योति आठों पहर जले
हे सत्संगत के तले...

हर पल याद तुम्हारी हो

तर्ज : तुम दिल की धड़कन में

हर पल याद तुम्हारी हो हर पल तेरा नजारा हो
सेवा सुमिरन और सत्संग जीवन ये हमारा हो

सुबह-सुबह जब आंख खुले तेरा ही दीदार मिले
हर पल तुझको हो अर्पण ऐसा कारोबार मिले
शाम सुबह कुछ भी हो केवल ध्यान तुम्हारा हो

मन के आंगन में सतुगुरु तेरे नाम का फूल खिले
जब-जब पाऊं दर्श तेरा, मेरे मन को चैन मिले
दुनिया से अब क्या लेना बस एक तू हमारा हो

ऐसी दया करो भगवन वाणी में भी मिठास हो
तेरा मैं गुणगान करूं और तू मेरे पास हो
जब भी मैं मुंह खोलूं तेरा ही जयकारा हो

जीवन की हर बेला में, सतुगुरु तेरा साथ हो
अंग-अंग रहना तुम मेरे, दिन हो चाहे रात हो
मौत भी जब आए तो सामने तेरा नजारा हो

होली में तेरो लाड़ला

होली में तेरो लाड़ला, यशोदा तेरो लाड़ला
छेड़े है मुझको सताए वो बड़ा

होली खेले कान्हा, वो ऐसा रंग डाले
भर-भर के पिचकारी, मोरी साड़ी रंग डाले
कैसे छुड़ाऊं मैं अपनी बहियां
यशोदा तेरो लाड़ला...

लाज शरम नहीं आए, वो ऐसा छलिया है
छल-छल के रंग डाले, अजब ये बला है
कैसे मनाऊं मैं रंगीलो सांवरियां
यशोदा तेरो लाड़ला...

आई होली आई, उड़ाए है गुलाल रे
उड़ाए अबीरा ये सखियों की टोली पे
ये कैसा है छलिया, ये कैसो लाड़ला
यशोदा तेरो लाड़ला...

संग तेरे खेलूं होली, ये अर्ज है कान्हा
शिकवा-शिकायत, चाहे कितनी हो कान्हा
प्रेम की डोरी से बांध लिया
यशोदा तेरो लाड़ला...

हिम्मत न हारिए

हिम्मत न हारिए, प्रभु को न विसारिए
हंसते मुस्कराते हुए जिंदगी गुजारिए

हंसते मुस्कराते हुए जीना जिसको आ गया
रोते हुए दिलों को सीना जिसको आ गया
ऐसे देवताओं के चरण पखारिए
उनकी तरह नेक बनके जिंदगी गुजारिए...

काम ऐसा कीजिए जिसमें हो सबका भला
बातें ऐसी कीजिए जिसमें हो अमृत भरा
मीठी बोली बोल सबको प्रेम से पुकारिए
कड़वे बोल-बोल के न जिंदगी गुजारिए...

मुश्किलों मुसीबतों का करना हो जो खात्मा
हर समय ही कहते रहिए शुकर परमात्मा
गिले शिकवे कर अपना हाल न बिगाड़िए
जैसे प्रभु राखे वेसी जिंदगी गुजारिए...

होली आई रंग लाई

तर्ज : मैं निकला ओ गड्डी लेके

होली आई रंग लाई, सब चेहरों पे मस्ती छाई
रंगरेज आया, मेरा रंगरेज आया
ये होली, प्रेम की बोली, मस्तों की टोली
मैं ले आया, मेरा रंगरेज आया

फागुन का महीना आ गया सबके दिल में है छा गया
जो भी आया है इस दर पर वो प्रेम रंग में नहा गया
ओ सब आए, इस दर पे, होली में सबको रंगने
रंगरेज आया, मेरा....

हर साल ये मौसम आता है, सबको मस्ती में लाता है
फिर और न कुछ भी दिखता है बिन पीए मस्त हो
जाता है सब रस्में, सब कसमें, सब रिश्ते, सब बंधन
मैं तोड़ आया, मेरा...

सब पीते हैं फिर गिरते हैं
हम पीते हैं पर गिरते नहीं
ये प्रेम का जाम जो पीता है
नित नशे में मस्त वो रहता है
ये जीवन, ये तन-मन, तुझपे अर्पण
सब समर्पण मैं करने आया मेरा...

है अपना सौभाग्य हमें गुरु मिला

तर्ज : मेरे सपनों की रानी कब आएगी तू

है अपना सौभाग्य हमें गुरु मिला
कोई पिछले जन्म का होगा सिला
आओ अपने जीवन को बना लें हम
हरिओम हरिओम...2

संसार की माया कर देती सफाया
तेरी ज्ञान की ज्योति गुरु ने है बचाया
यूं ही चलता रहे ये सिलसिला
है अपना सौभाग्य...

तू छोड़ आसक्ति कर ले प्रभु भक्ति
ईश्वर से मिलन को गुरु ने दी युक्ति
हमें लक्ष्य की ओर ले जा रहा
है अपना सौभाग्य...

मेरे जीवन की नैया, जो खाए हिचकोले
हाथ थाम ले गुरु का, भव पार तू होले
तू व्यर्थ की चिंता कर रहा
है अपना सौभाग्य...

तुमको जो मिला है यहां ज्ञान खजाना
गुरु के शुकराने तू हर पल गाना
प्रेम अमृत वो सबको पिला रहा
है अपना सौभाग्य...

हुआ मन मंदिर में उजाला

हुआ मन मंदिर में उजाला-हुआ मन मंदिर में उजाला
सत्गुरु कृपा से ही पाया, मन में बांसुरी वाला,

जित वल देखूं उत वल प्यारा,
न कोई वैरी मीत हमारा,
खालिक खलक, खलक में खालिक,
दिया यह मंत्र मुक्ति वाला।
हुआ मन मंदिर में उजाला...

झुकता वही जिसमें जान होती,
अकड़ तो मुर्दे की पहचान होती,
जो झुक जाए फल डाली
जीवन यूं व्यर्थ कर डाला।
हुआ मन मंदिर में उजाला...

प्रेम बिना सब ज्ञान है थोथा।
प्रेम न होता तो अभिमान होता,
बलिहारी सत्गुरु अपने की
बदल जीवन को डाला।
हुआ मन मंदिर में उजाला...

होली आई रे कन्हाई

होली आई रे कन्हाई, होली आई रे
होली आई रे
कन्हाई रंग छलके, सुना दे जरा बांसुरी
होली आई रे-2

बरसे गुलाल रंग मोरे अंगनवा
अपने ही रंग में रंग दो मोहे सजनवां-2
तोरे कारण घर से आई होऽऽ-2
हूं निकल के सुना दे जरा बांसुरी...

छूटे ना रंग ऐसी रंग दे चुनरिया
धोबनिया धोए चाहे सारी उमरिया-2
मोहे भाए ना हरजाई होऽऽ-2
रंग छलके सुना दे जरा बांसुरी...

ज्ञान सुहाना मिल गया

ज्ञान सुहाना मिल गया रे मुझे सत्गुरु प्यारे से
मुझ विरले को बांध लिया, मेरे गुरु ने इशारे से
मुझे है प्यारा रहवर मिला, आत्म दर्शन करा दिया

खोई बहारें पाकर के सच्ची पहचान मिल गई
कौन हूं मैं और कहां से आई सच्ची समझ मुझे आ गई
अज्ञान मिट गया वाह रे वाह
और द्वैत धुल गया वाह रे वाह
जन्म-जन्म के कर्म मिटे गुरु तेरी कृपा से

दुख सुख जब-जब आए, तत्व मुझे बतला दिया
द्वंद्वी जोड़ों ने मुझे सम रहना सिखला दिया
बोला ब्रह्म सत्य है हां जी हां
और जगत मिथ्या है हां जी हां
ब्रह्म ज्ञान का सार मिला, मुझे तेरी रहमत से

नजर नूरानी मिल गई हृदय प्रेम से भर गया
वाणी समरस हो गई अंतस कमल ये खिल गया
मैं पाक हो गई वाह रे वाह
भरपूर हो गई वाह रे वाह
जीवन मुक्ति का आनंद पाया
तेरी शरण में आने से ज्ञान सुहाना मिल गया रे...